ज्ञानामृत जनवरी, 1983 वर्ष 18 ❋ अंक 7 मूल्य 1.25

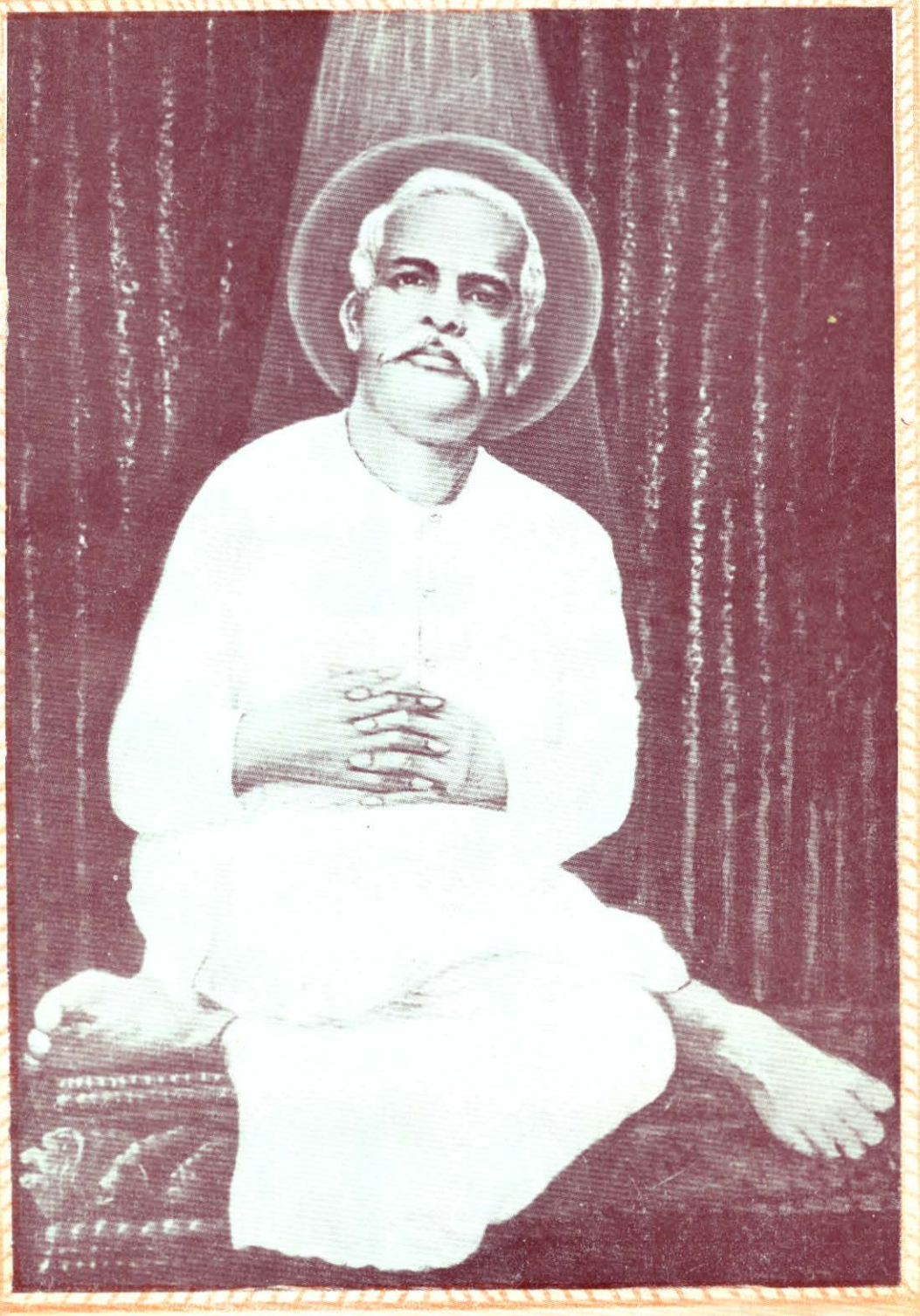

स्मृति दिवस अंक

लन्दन में दादी जानकी जी 'हार्ट एण्ड सोल' सम्मेलन का उद्घाटन करने के पश्चात् शिव बाबा का सन्देश देते हुए। मंच पर (बाएं से) डॉ०कैरूथर्स, ब्र०कु० जयन्ती, ब्र० कु० जानकी तथा ब्र० कु० डॉन उपस्थित हैं।

काठमाण्डू में महारानी सरकार ऐश्वर्य राज्य लक्ष्मी देवी शाह के ३४वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में उपहार देती हुई ब्र० कु० शीला बहन।

पाण्डव भवन, आबू पर्वत पर भ्राता बकोलिया, उपमंत्री विद्युत और जन-कल्याण, राजस्थान पधारे। चित्र में दीदीजी, दादीजी तथा अन्य ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ दिखाई दे रहे हैं।

चण्डीगढ़ में विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र० कु० अचल पंजाब के राज्यपाल, भ्राता चन्ना रेड्डी को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

तिरुपति में हुए 'प्राचीन भारत का वैभव' विषय पर हुई अन्तर्राष्ट्रीय निबन्ध स्पर्धा में विजेता लेखकों को संस्कृत विद्यापीठ के प्रिंसीपल बाल सुब्रामण्यम पुरस्कार वितरण करते हुए।

भोपाल में उच्च शिक्षामंत्री भ्राता मोतीलाल वोराजी पधारे थे। उनको संग्रहालय दिखलाने के बाद भ्राता महेन्द्रजी ईश्वरीय सेवाओं का एलबम दिखा रहे हैं।

कुरुक्षेत्र में सूर्य-ग्रहण के अवसर पर मानव कल्याण आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात् कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय के उप-कुलपति भ्राता गणपतिचन्द्र गुप्ता तथा ब्र० कु० भाई-बहनें शिव बाबा की याद में खड़े हैं।

पाडंवपुर(मैसूर)में आयोजित बाल नैतिक शिक्षा प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् मैसूर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति अपना अभिप्राय लिखते हुए।

फरीदाबाद में 'विश्व शान्ति पथ प्रदर्शक' मेले के उद्घाटन अवसर पर भ्राता ए०सी० चौधरी, मन्त्री लोकल बाडीज, हरियाणा तथा ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी, गायत्री मोदी ज्योति जलाते हुए।

Regd. No. D (E) 70

पर्थ (आस्ट्रेलिया) के महापौर को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् ब्र० कु० मोहिनी तथा अन्य ब्र० कु० बहन-भाई महापौर के साथ

भ्राता बृजमोहन सिंगलाजी, कराधान व आबकारी मंत्री, हरियाणा जीन्द सेवा केन्द्र पर पधारे। ब्र० कु० विजय बहन उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

कोननगर सेवा केन्द की तरफ से श्रीरामपुर में प्रदर्शनी लगाई गई। उस अवसर पर ब्र० कु० निर्मल-शान्ताजी प्रवचन करते हुए। पास में स्वामी शिवानन्द गिरिजी तथा ब्र०कु० सन्तरी जी तथा अन्य विराजमान हैं।

पांडव भवन(आबू पर्वत) पर मोदी इन्डस्ट्रीज़ के अध्यक्ष भ्राता के. एन. मोदी अपने परिवार सहित दीदी, दादी तथा अन्य ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ।

वर्ष १८ अंक ७ जनवरी १९८३ मूल्य १.२५

अमृत–सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	अनुकरणीय ब्रह्मा बाबा	१
२.	गुण-मूर्त्ति बाबा (सम्पादकीय)	२
३.	अतीत को याद करती हुई दादी प्रकाशमणि (भेंट वार्ता)	६
४.	सर्वश्रेष्ठ ऋषि-ब्रह्मा बाबा	९
५.	क्लास के लिए प्रश्न	११
६.	याद आती है, प्यारे बाबा की तपस्या	१२
७.	हमने सुना है (कविता)	१४
८.	ब्रह्मा बाबा के जीवन सम्पर्क के कुछ अनुभव मोती	१५
९.	यादें	१७
१०.	प्रश्नों के उत्तर	१७
११.	ब्रह्मा का आह्वान (कविता)	१८
१२.	राजा जनक ने विद्वानों को बन्दी क्यों बनाया ?	१९
१३.	समाचार चित्रों में	२१
१४.	हे नवयुग के निर्माता ! (कविता)	२५
१५.	बाबा ने एक सैकण्ड में नज़र से निहाल कर दिया (अनुभव)	२७
१६.	बाबा द्वारा दी गई शिक्षायें	२८
१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

अनुकरणीय ब्रह्मा बाबा

१८ जनवरी को विश्व-भर के चालीस से भी अधिक देशों के लोग ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने का दिवस गूढ़ योगाभ्यास के द्वारा तथा उनके जीवन-चरित्रों की चर्चा के रूप में मनायेंगे क्योंकि सन् १९६९ में उन्होंने इसी दिन देह का कलेवर त्यागा था और अव्यक्त लोक को प्रस्थान किया था।

बाबा के जीवन में अनेकानेक अनुपम विशेषताएँ थीं। शिव बाबा उनके माध्यम से जो ईश्वरीय ज्ञान देते, उन्हें वे आचरण में लाकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करते। अतः शिव बाबा कहते कि अन्य किसी मनुष्यात्मा के जीवन की ओर न देखकर एक ब्रह्मा बाबा ही की ओर देखो। अतः 'श्रीमत' क्या है और उसका पालन कैसे करना है, उसका प्रैक्टीकल नमूना तथा स्पष्टीकरण ब्रह्मा बाबा के जीवन से मिलता है। किस परिस्थिति में एक राजयोगी एवं ज्ञानवान व्यक्ति को कैसे पार करना चाहिये, यह हम प्रायः ब्रह्मा बाबा के जीवन से सीख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, ब्रह्मा बाबा ने जिस प्रकार ईश्वरीय सेवा की और सेवा करने की धुन दूसरों को भी लगाई, वह भी अनुपम है। सेवा में वे दिन-रात लगे रहते और उन्होंने तन-मन-धन सेवा में ही सफल कर दिया। उनका उत्साह, उनकी उमंग और उनकी गति देखने जैसी होती। आयु अधिक होने, कोई अस्वस्थता या समस्या सामने आने पर भी उन्होंने सेवा के कार्य को नहीं रोका। शिव बाबा की अनन्य एवं निरन्तर स्मृति से उन्होंने दूसरों में भी विशेष उत्साह भर दिया। आज अव्यक्त होकर वे विश्व की व्यापक सेवा में जुटे हैं।

इस प्रकार, उनका उज्ज्वल एवं निर्मल योगी जीवन, उनका स्नेह, उनकी मधुरता, नम्रता, सहनशीलता आदि भी अवर्णनीय हैं। धन्यवाद है ऐसे पिता को जो परमपिता को स्पष्ट करने के निमित्त बने।

□

सम्पादकीय

गुण–मूर्ति बाबा

बाबा का चित्र और बाबा के चरित्र जब क्रमशः हमारे बाह्य नेत्रों और अन्तर्चक्षुओं के सामने आते हैं तो मन गद्‌गद् हो उठता है। मन बुद्धि से पूछता है कि बाबा एक भव्य मूर्ति तो थे, सौम्य मूर्ति भी थे परन्तु उनमें और कौन-सा गुण मुख्य रूप से विराजमान था जो और गुणों से भी आगे बढ़कर सर्व-प्रथम अपनी छाप किसी व्यक्ति पर लगाता था। तब बुद्धि कहती है कि वास्तव में बाबा में सब गुण आपस में इस प्रकार से जुड़े थे कि वे समन्वित रूप से ही मनुष्य पर इस प्रकार प्रभाव डालते थे जिस प्रकार शहद में अनेक फलों का रस मिलकर एक तार और एक धार हो जाता है कि अब उन्हें अलग करना कठिन होता है, तो भी शहद के बारे में यह तो कहा ही जाता है कि वो मीठी होती है। 'मधु जैसा मीठा'—यह कहावत ही चली आई है। इसी प्रकार बाबा के सर्व-गुण मनमोहक थे और वो आत्मा में मधु-जैसा मिठास भर देते थे। इसलिए ही तो बाबा जहाँ रहते, उनके निवास का नाम ही पड़ गया—'मधुबन'।

बाबा के जो चरित्र एक चलचित्र के रूप में अब मानस-पटल पर एक के बाद एक आते-जाते हैं, वे सभी के सभी किसी-न-किसी दिव्य गुण का ही आलेख है। **बाबा का कोई हाव-भाव, उनका कोई शब्द-आलाप, उनकी कोई भाव-भंगिमा, उनके मुख-मण्डल की मुस्कान, दिव्य-चरित्र की परिगणना से बाहर नहीं होते थे बल्कि वे किसी-न-किसी ईश्वरीय कर्त्तव्य की पूर्ति या किसी-न-किसी सेवा के निमित्त ही होते थे। वे नेत्रों से निहारते थे तो भी आत्माओं को कल्याण की दृष्टि से देखते हुए उन्हें ईश्वरीय प्यार से सींच देते। जिस पर बाबा की दृष्टि पड़ती, वह उनकी नज़र से निहाल हो जाता। उसकी सुषुप्त आत्मा जाग उठती।** बाबा की दृष्टि ऐसी होती कि जैसे वे आत्मा को साथ लेकर, योग के अनुभव की गहराइयों में डुबकी लगवाकर, उसे अभूतपूर्व शान्ति, आनन्द और प्रकाश का अनुभव करा रही हो। बाबा के नेत्रों के कोनों में, कभी किसी को देखते समय जो कुछ रेखायें उभर आतीं थी, उनसे लगता कि बाबा अपार प्यार और दुलार दे रहे हैं। बाबा की उस एक नजर से मनुष्य के शरीर का भान मिट जाता और आत्मा स्वयं को एक प्रकाश के समुद्र में हिलोरें लेती हुई अनुभव करती और उसके सभी मोह नष्ट हो जाते तथा उसे ऐसे मालूम होता कि उसे सब-कुछ मिल गया है। उस नैन-मुलाकात में आत्मा में यह भाव झंकृत हो उठते कि—"तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है, ज़मीं तो जमीं आसमां पा लिया है…" इस प्रकार, **बाबा का प्यार केवल 'प्यार' ही नहीं होता बल्कि वह ज्ञान, योग और सेवा को भी साथ लिये हुए होता, क्योंकि जैसे ज्ञान मनुष्य के मोह को नष्ट करता है, जैसे योग मनुष्य को देह से न्यारा बनाता है, जैसे सेवा करने वाले के प्रति किसी का स्नेह जागता है, वैसे ही बाबा के प्यार की एक नज़र ये सभी काम एक साथ कर देती।** तभी तो किसी ने कहा है कि—"तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम…।" संसार में अन्य कोई हमें कभी प्यार से देखता है तो हम उसके प्यार का अनुभव तो करते हैं परन्तु उस नज़र से 'नष्टोमोह', 'स्मृति-लब्ध', 'गत संदेह' और 'करिष्येवचनंतव' (जैसे आप कहेंगे, वैसे ही करूँगा) के भाव पैदा नहीं होते। अतः कहना होगा कि बाबा जब प्यार करते, वे केवल प्रेम-मूर्त्त नहीं बल्कि उसके साथ-साथ ज्ञान-मूर्त्ति, योग-

मूर्त्ति, सेवा-मूर्त्ति और कल्याण-मूर्त्ति भी होते और वे अपनी सूरत से भी मनुष्यों की सीरत बनाने का कमाल करते। वे हाथ उठाकर उसकी अंगुलियों को आगे से थोड़ा-सा मोड़कर, किसी दूरस्थ वत्स को अपनी ओर जब बुलाते तो वो चेहरे पर खुशी की झलक लिये ऐसी तेज़ रफ़्तार से भागा आता कि कहीं देर हो जाने पर ख़ज़ाना लुट न जाए। समीप आकर बाबा की आँखों में देखता, बाबा का हाथ अपने हाथ में ले लेता और अपना सिर बाबा के सीने पर रख देता और बाबा उसे अपनी बांहों में भर कर दुलार देते। जिस बात के लिये बाबा ने बुलाया था, वह बात तो बाद में शुरू होती। गोया वह बाद में बाबा से पूछता कि—"बाबा, क्या सेवा है?" परन्तु पहले तो वह बाबा की मधुर मुस्कान देखकर आत्मा के मिलन की चाह पूरी करता। यदि वह सायं का समय होता तो उसके दिन-भर की थकावट उतर जाती। यदि वह प्रातः का समय होता तो उसमें कम-से-कम दिन-भर के लिए एक नई उमंग, नई तरंग, नया उत्साह एक ज्वार-भाटे की तरह उभर आता कि वह उस दिन पहाड़ उठाने में भी अपने-आपको सक्षम और समर्थ समझता। जैसे सुराही मिट्टी की बनी होती है, परन्तु फिर भी सुराही का डिज़ाइन और उस पर बने फूल-बेल, कमरे की शोभा को बढ़ाते हैं और वह सुराही गर्मी से तपे हुए दिन में प्यास बुझाती और ठण्डक लाती है, वैसे ही यद्यपि बाबा का शरीर पाँच तत्वों से ही गढ़ा हुआ था तथापि वह एक चुम्बकीय प्रभाव से आत्मा को अपनी ओर खींचता था और अपने स्पर्श से उनके अंगों में भी शीतलता भर देता और उनके अंग-अंग में भी मुस्कान पैदा कर देता।

नेष्ठी अवस्था

बाबा के जीवन की एक मुख्य विशेषता तो यह थी कि वे स्वरूप-निष्ठ थे। उन्हें शिव बाबा के अंग-संग रहने का इतना अभ्यास था कि वे दोनों शायद अलग ही न होते थे। वे जब खाना खाते तो अपने साथ भोजन करते वत्सों को कहते—"यह देखो, यह हाथ तो इसका है परन्तु शिव बाबा इस हाथ द्वारा इस बच्चे (ब्रह्मा) को कितने प्यार से भोजन करा रहा है; यह (ब्रह्मा) बाबा (शिव) का मुरब्बी बच्चा है न!" जब वे स्नान कर रहे होते और कोई उन्हें आकर कहता कि—"बाबा, ट्रंककाल (Trunk call) आया है", तो बाबा कहते—"बच्चे, उन्हें कह दो कि बाबा शिव पर लोटी चढ़ा कर अभी आता है", कभी तो वे ऐसा महसूस करते कि वे नहा नहीं रहे बल्कि उनके तन में जो शिव बाबा आया है, उस पर वे जल की लोटी चढ़ा रहे हैं और कभी उन्हें ऐसा लगता कि जैसे मात-पिता किसी बच्चे को नहलाते हैं, शिव बाबा अब उन्हें नहला रहे हैं। इस प्रकार उन्हें देह की सुधि न रहती और देह से सम्बन्धित कर्मों में भी वे शिव बाबा को न भूलते। सारा दिन अशरीरी शिव बाबा का मनन-चिन्तन, स्मरण, गुणानुवाद, गायन आदि करते-करते वे काया के आभास और माया के प्रहार से परे होते गये थे और उनकी स्थिति ऐसी होती गई थी कि जैसे देह में होते हुए भी वे न हों। उनकी निद्रा भी निद्रा नहीं रही थी बल्कि उसमें सुषुप्ति का अंश तो आटे में नमक के समान ही रह गया था; या शायद इतना भी न था क्योंकि शायद उसमें भी वे विश्व-सेवा के स्वप्न देखते और शिव बाबा से बातें करते। उनकी इस योगारूढ़, सदा जागती ज्योति के समान अवस्था का सुफल यह था कि **जब कोई भी उनके निकट आकर बैठता तो उनकी योग-दीप-शिखा उस व्यक्ति की ज्योति को भी जगा देती। कोई उनकी आँखों में देख लेता तो वह इस दुनिया से कहीं दूर एक सूक्ष्म सुखमय लोक में पहुंच जाता। कोई भी पुरुषार्थ किये बिना वह एक पंख के समान हल्कापन अनुभव करता; कम-से-कम उतने समय के लिए तो उसमें देह और संदेह का भाव मिट जाता। उसका पुराने-से-पुराना मनोविकार भी शान्त हो जाता और उसे एक अचिन्त्य, अवर्णनीय शान्ति का अनुभव होता। यदि उसने अपने इस या पिछले किसी जन्म में कुछ भक्ति या उपासना की होती तो सहज ही उसे बाबा के मुख-मण्डल पर और उसके आस-पास प्रभा-मण्डल दिखाई देता जिसे वह देखता ही रहता।** गोया बाबा की निकटता-मात्र से बिना बताये—मूक स्थिति में भी यह परिचय मिल जाता कि यह बाबा क्या कर्त्तव्य करते हैं और कैसी सृष्टि स्थापन कर रहे हैं और यह भी मन में विचार आता कि ऐसी आत्म-स्थिति की

अवस्था किंवा देह से न्यारेपन की स्थिति बड़ी मधुर है और सहज ही हो सकती है।

सादगी और सद्व्यवहार

बाबा सादगी का एक उत्तम नमूना था। वे एक छोटे-से कमरे में रहते थे जो पुराने ढंग का था और जिसकी छत भी पक्की नहीं बनी हुई थी बल्कि टीन की चादरों से बनी हुई है। उसी कमरे में वे आगन्तुक लोगों से, अतिथियों से और वत्सों से मिलते भी और उसी में पत्र भी लिखते। वहीं आकर उन्हें कोई अपने मन का हाल भी बताता, परामर्श भी करता तथा मार्ग-प्रदर्शना भी लेता। वही कमरा उनका शयनागार भी था, उनका भोजन-गृह (Dining Room) भी, उनका छोटा कार्यालय भी और मिलन-मुलाकात का कमरा (Drawing Room) भी। वहाँ न कोई आधुनिक प्रकार का फर्नीचर रखा रहता, न उसमें कोई ग़लीचा बिछा था, न वह वातानुकूलित (Air Conditioned) था और न ही वहाँ कोई डबल फ़ोम (Double Foam) पड़ा था बल्कि एक बड़ी-सी गद्दी थी जिस पर वे स्वयं भी बैठते और कई बार वत्सों को भी बिठाकर प्यार, पुचकार और दुलार देते तथा अपने हाथों से मिष्ठान (टोली) देते। परन्तु स्वच्छता में वह कमरा अनुपम था। बिस्तर पर सफेद चादरें बिछी हुई, दीवारों पर सफेद चूना हुआ, गद्दी भी सफेद वस्त्र से ढकी हुई और यहाँ तक कि कमरे की अल्मारी भी सफेद रोगन से शोभायमान थी। उसमें जब श्वेत वस्त्रधारी बाबा के सामने बैठते और उनकी पावनकारी वार्ता सुनते तो मन की कालिमा भी मिट जाती और वह भी निर्मल तथा उज्जवल हो जाता। न कमरे की कोई विशेष साज-सज्जा थी और न कोई बनाव-ठनाव परन्तु उस कमरे में बैठकर सेवा-मूर्त्ति बाबा ने कितनी आत्माओं को एक नया जीवन प्रदान किया होगा, कितनों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करके माया से युद्ध जीतने के योग्य बनाया होगा। कितनों ने वहाँ बैठकर प्रभु-मिलन का सुख पाया होगा और ईश्वरार्पित होने का संकल्प लिया होगा। न बाबा के तन पर कोई बनावटी शृंगार, न बाबा के कमरे में।

बाबा कहते—"बच्चे, इस ईश्वरीय सेवा में जिस किसी ने एक पैसा भी अर्पित किया है, उसका वह पैसा भी एक लाख रुपये से अधिक मूल्यवान है और वह मनुष्यात्माओं को पावन बनाने तथा उनको शान्ति देने की सेवा के लिये हैं; उसे हम अपने सुख-भोग के लिए खर्च नहीं कर सकते वरना वह 'अमानत में ख्यानत' होगी।" उन दिनों पाण्डव भवन में एक नव-भवन भी बना था जिसमें अनेकानेक कमरे थे। कई वत्स बाबा से कहते—"बाबा, अब आप उनमें से किसी कमरे में क्यों नहीं आ जाते?" तब कभी तो बाबा कहते—"बच्चे, अब तो इस दुनिया को भी छोड़ना है, इस कमरे की क्या बात करते हो? अब तो फ़र्श से अर्श में जाना है।" दूसरे किसी अवसर पर वे कहते—बच्चे, इस दुनिया में कुछ भी नया नहीं, नया तो अब सतयुग में जाकर बनायेंगे; यह तो सारी दुनिया ही पुरानी है। बाबा ने पुराना तन लिया है, अपना योग भी पुरातन है तो कमरा भी पुराना ही ठीक है।"—ऐसा कहते हुए वे मुस्कुरा देते और प्यार से कहते कि "नया मकान तो आप सर्विस-एबल, सिकीलदे बच्चों के लिए प्यार से बनाया है। बाबा प्यारे बच्चों को वहाँ रहा कर खश होते हैं।" कभी बाबा यह भी कहते—"बाप तो बच्चों को सुख देने आया है; बाप बच्चों का सदा सर्वेन्ट (सेवाधारी) होता है तभी तो लौकिक बाप भी बच्चों को पैदा कर उनके लिए जीवनभर कमाता है और उन्हें विरासत (Inheritance) देता है। बाप का जो-कुछ भी होता है, वह बच्चों के लिए होता है। अतः यह भी आप बच्चों ही के लिये है; यह बाप तो विश्व-सेवक है न! सेवक तो सर्वेन्ट्स क्वार्टर (Servant's Quarter) में रहते हैं। नये मकान में तो मालिक रहता है और आप तो 'बालक सो मालिक' हैं।" इस प्रकार बाबा के त्याग, सेवा और उनकी सादगी की क्या दासतां सुनायें!

उनका आहार अल्प, खर्च अल्पतम और उनकी सेवा अथक तथा उनके स्नेह की छाप अमिट थी। वे भद्रता, सज्जनता, आतिथ्य और सत्कार के आदर्श देवता रहे। मधुबन में आकर जो कोई भी रहता, वह चाहे किसी कारखाने का दैनिक वेतन (Daily Wages) पर कार्य करने वाला, अशिक्षित व्यक्ति हो और चाहे शिक्षित एवं बुद्धिजीवी, समाज का कोई विशिष्ट एवं मान्य व्यक्ति हो, बाबा का प्यार सभी

के लिए पितृवत था। वे सभी को विशेष आत्मा (V. I. P.) मानकर उनसे संभाषण करते। उन्होंने कभी किसी को व्यक्तिगत रूप से फटकार, ललकार (Challenge) या डांट-डपट नहीं दी बल्कि वे सदा सभी से सुकोमल, सुमधुर, सद्भावना पूर्ण और सम्मान सहित शब्दों से वार्ता करते। सदा उच्च स्थिति में रहते हुए, महानता के शिखर पर बैठे हुए वे सभी को महान बनाने की चेष्टा करते और उनके साथ मर्यादित व्यवहार, श्रेष्ठ बर्ताव, शालीन रीति-नीति और सत्कारपूर्ण विधि से बर्ताव करते। उनके मीठे बोलों, उनकी मीठी दृष्टि, उनके मधुर व्यवहार, ज्ञान की मीठी बातों और उनकी मीठी मुस्कान और 'मीठे बच्चे' कहकर पुकारने के कारण ही तो उनके निवास का नाम पड़ा—**'मधुबन-तपोवन'**

आज भी बाबा का वह कमरा सेवा के निमित्त है। उस कमरे में वही चारपाई मौजूद है, वही गद्दी बिछी है, वहाँ वही सफेद अलमारी भी है, परन्तु बीच की एक दीवार निकाल दी गई है जिससे वह कमरा अब बड़ा हो गया है। बाबा ने उस कमरे में रात-दिन जो सेवा की, वह अविनाशी हो गई। उस वायु-मण्डल में त्याग, तपस्या, सेवा, सादगी, स्नेह, माधुर्य, वात्सल्य, दुलार के प्रकम्पन, स्पन्दन और सुगन्धित-तरंगें अभी भी वहाँ बैठने वाली आत्माओं को प्रभावित करती हैं। बाबा का वहाँ रखा ट्रांस लाईट (Trans Light) आज भी संदेश और निर्देश देता हुआ तथा स्नेह और वात्सल्य की भाव-तरंगों से तरंगित करता हुआ तथा दृष्टि लेना चाहने वालों को दृष्टि देता हुआ, पूछने वालों को प्रश्न का उत्तर और मिलना चाहने वालों से मिलन-मुलाकात करता हुआ प्रतीत होता है। बाबा फर्श से अर्श पर चले जाने के बाद भी अथवा व्यक्त से अव्यक्त होने के बाद भी उस कमरे में आने वालों से मिलते हैं, उनको सूक्ष्म वरदान देते हैं, उन्हें कमियाँ दूर करने की विधि बताते हैं और उन्हें वहाँ से खाली नहीं भेजते—वे उन्हें कोई-न-कोई सूक्ष्म सौगात देते हैं। कोई पृथ्वी पर स्थित निकट स्थान से आता है और कोई दूर से परन्तु बाबा सूक्ष्म-लोक से आकर स्नेही वत्सों से स्नेह पूर्वक मिलते हैं।

आओ, आज हम उस ऐसे मीठे बाप को जान व जिगर से, तन और मन से, अपनी हर तार, हर नस से, दिल की तह से शुक्रिया अदा करें कि जिसने रूहानी प्यार से हमें मीठे बच्चे कहा ! हमारे लिए अपनी सर्व-सम्पत्ति और सर्वस्व लगा दिया, हमारे लिए अपने सम्पत्तिमय जीवन को समाप्त कर, अपनी नींद व अपने आराम को भी छोड़कर, लोगों की निन्दा, कटु-आलोचना, विरोध और हंगामों को सहन कर हमें मनुष्य से देवता बनाने के लिए अपनी हड्डी-हड्डी भी दे दी—कि जिन अस्थियों पर भी बना हुआ शान्ति स्तम्भ आज हमें विश्व को शान्ति देने की प्रेरणा देता है और हम में सेवा, त्याग, तपस्या तथा एकता के नये प्राण फूँकता है।

—जगदीश

नया वर्ष मुबारिक !

'ज्ञानामृत' के परिवारजनों, पाठकों को
नये वर्ष में नया उत्साह,
नई उमंग, तीव्रतर पुरुषार्थ और
उसमें सफलता मुबारिक हो !

अतीत को याद करती हुई दादी प्रकाशमणि

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि

अनेकानेक मनुष्यात्माओं को दिव्य प्रकाश से प्रकाशित करने वाली दादी प्रकाशमणि की अलौकिक सुगन्ध से शिव-बाबा की वाटिका महक रही है। उनका त्यागी और योगी जीवन अनेक आत्माओं को प्रेरणा दे रहा है। उनका रूहानियत सम्पन्न चेहरा अनेक चेहरो में रूहानियत का बीज अंकुरित कर रहा है। आपके मुख की दिव्य मुस्कान, दूसरों के दुखों का अन्त कर देती हैं। आप इस समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका हैं। जैसे परमपिता से रूहों का असीम प्यार है, वैसे ही दादी जी ने सभी आत्माओं के दिल को जीत कर इस संगठन को एकता के सूत्र में बाँधा है। ईश्वरीय परिवार आपकी सेवाओं से गौरान्वित है। यहाँ, ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्थिति प्राप्त कर अव्यक्त होने के समय के दादी जी के अनुभव, उनके ही योग-युक्त भावों में प्रस्तुत हैं···।

मैं कई वर्षों से बम्बई सेवा पर उपस्थित थी। वहाँ भेजकर बाबा ने मुझे कहा था, कि बच्ची, जैसे बाबा सभी को संतुष्ट करता है, वैसे ही तुम भी सभी को सन्तुष्ट करो। और जैसे कि बाबा ने मुझे वरदान दे दिया था।

मुझे यह सदा उमंग रहता था कि मैं बाबा की सभी प्रेरणाओं को पूरा करूँ। और यह मेरा अनेक बार का अनुभव है कि बाबा का पत्र आने से पूर्व ही मैं बाबा की प्रेरणाओं को जान लेती थी। जिन महान सेवाओं के लिए बाबा ने मुझे भेजा था, मैं पूर्णतया निभाती थी, सभी के प्रति सुख-स्वरूप होकर रहने की कामना रखती थी। इस प्रकार मैं दिसम्बर 1968 में बम्बई से पार्टी लेकर मधुबन आई थी। उसी समय दीदी सेवा-केन्द्रों पर चक्कर लगाने दिल्ली की ओर जाने वाली थी इसलिए मैं वहीं मधुबन में बाबा के पास रह गई। और ये कुछ ही दिन बाबा के साथ रहना, कि बाबा ने मुझे सब कुछ सिखा दिया।

मैंने देखा कि बाबा जब किसी भी बच्चे से मिलता है तो थोड़े ही शब्दों में उसकी समस्याओं को हल करके, उसे हल्का कर देता है।

मैं देखती थी, बाबा यज्ञ के कार्य करते सदा उपराम नजर आते थे। ऐसा लगता था कि निराकार शिव बाबा सदा ही उनके तन में विराजमान हैं। परन्तु वास्तव में वह साकार बाबा ही निराकार हो चुके थे। सम्पूर्ण फरिश्ता बन चुके थे।

बाबा ने मुझे एक हफ्ते में ही सब कुछ सिखा दिया। पार्टियों को बाबा की भासना कैसे देनी है। यज्ञ को पूर्णतया कैसे सम्भालना है। हर बच्चे की स्थित पर कैसे ध्यान रखना है, सब यज्ञ वत्सों को कैसे सन्तुष्ट करना है। आदि···आदि

एक दिन बाबा ने मुझसे कहा, "कुमारका, अगर बाबा एक तरफ बैठ जाए तो तुम यज्ञ को सम्भाल सकती हो?" मैंने बड़े ही फ़ख्र से उत्तर दिया—"हाँ बाबा, क्यों नहीं।" मुझे क्या पता था कि बाबा के ये बोल सम्पूर्ण सत्य होंगे और हमारा प्यारा बाबा सचमुच ही देह से न्यारा होकर वतन में बैठने जा रहा है। तब बाबा को अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता बनने का स्पष्ट अनुभव था।

बाबा आपको क्या वरदानी बोल बोलते थे और बाबा के साथ रहते आपने क्या क्या सीखा?

बाबा कहा करते थे—"ये बच्ची माला में नम्बर

वन है। ये (Faithful) वफादार बच्ची है।

तभी बाबा कहते थे कि ये बाबा की सम्पूर्ण पवित्र कन्या है। ये सच्ची आज्ञाकारी बच्ची है।

मैं सदा ऐसे ही समझती थी—"जैसे कि मेरे दिल में बाबा और बाबा के दिल में मैं हूँ, मुझे बाबा की सम्पूर्ण श्रीमत पर चलना है। कुछ भी छिपाना नहीं हैं। और मुझे सदा ये उमंग रहता था कि मैं बाबा की आशाओं का चिराग बन कर रहूँ।"

बाबा कहा करते थे कि कुमारका बड़ी नदी है। ये महारथी बच्ची है इस प्रकार मुझे यह महसूस होता था कि जैसा मेरे मन में बाबा के प्रति अथाह प्यार व आदर है, बाबा भी मुझे सच्चे प्यार व सम्मान की दृष्टि से निहारता है। बाबा के साथ रहते हुए मैंने बाबा के जीवन से अत्यधिक उदारता और राजाओं जैसी शालीनता सीखी। मैंने बाबा से कार्य व्यवहार में रहते हुए उपराम रहने की कला सीखी, बाबा ने मुझे क्या नहीं सिखाया, सिखाया ही नहीं बरदानों से इतना सजाया जो आज भी बाबा के वे चरित्र नयनों से ओझल नहीं होते।

जब बाबा अव्यक्त हुए, उस दिन बाबा की दिनचर्या कैसी रही ?

उस 18 जनवरी के स्मृति पटल पर अमिट रूप से अंकित दिवस पर सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में और बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही समय था जबकि बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलाई थी, परन्तु उस दिन सर्वोच्च स्थिति में, ईश्वरीय खुशी में स्थित थे।

जब हमने डाक्टर को मंगाने को कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था—"बच्ची डाक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।"

उसी दिन बाबा ने कहा—"आओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ।" और फिर बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, "बच्चे सदा एक मत होकर, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है। तब ही सेवा में सफलता होगी।" ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिए थे। कितनी सौभाग्यशाली थी वे आत्माएँ जिन्हें स्वयं सृष्टि रचता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे।

फिर शाम को जल्दी ही क्लास प्रारम्भ हुई। मैंने कहा "बाबा, सभी इन्तज़ार कर रहे होंगे, आज जल्दी ही आप क्लास में चलें। उस दिन बाबा 8.00 बजे ही क्लास में चले और साकार रूप में वे अन्तिम महावाक्य तो सम्पूर्ण गीता ज्ञान का सार है···दिल में समाने तुल्य है···बाबा ने कहा था—

"बच्चे, सिमिर सिमिर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।"

"बच्चे, निन्दा जो हमारी करे, मित्र हमारा सोई" तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिये और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।"

इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुये यज्ञ पिता, बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये···बोले—"बच्चे निर्विकारी, निराकारी और निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" और फिर उस अन्तिम घड़ी की पूर्व परछाई फेंकते हुए बाबा के मुख से ये शब्द निकले—"अच्छा बच्चे विदाई।" ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा, सदा बच्चों को गुड नाइट ही कहा करते थे।

जब बाबा ने देह त्याग कर सूक्ष्म वतन को अपना सिंहासन बनाया, वह अनुभव सुनाइये

मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम 4 बहनें भी बाबा के साथ गईं, तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शान्ति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अन्तिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चले और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ व उत्तर-दायित्व दे गये।

हमारी समझ में कुछ नहीं आया। हमने बाबा को लिटा दिया, इतने में ही डाक्टर आ गया और उसने चैक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे····· परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया। मैं यही कह रही थी कि बाबा है···सबका प्यारा बाबा है···बाबा सदा साथ रहेगा—।

बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी—ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले पधारे। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ हैं।

बाबा ने हाथ में हाथ देकर मेरी हिम्मत बढ़ा दी थी। मैं अडोल थी। मुझे यह संकल्प मात्र भी नहीं आ रहा था कि "क्या हो गया" या "अब क्या होगा।" मेरी दिल भी नहीं भरी, मेरे नयन भी नहीं भरे थे। मुझ पूर्ण विश्वास था कि हमारी पढ़ाई तो अन्त तक चलती रहेगी।

और इसके बाद 21 जनवरी का वह दिन आया, जब उस बाबा के पार्थिव शरीर का, जिसने लौकिक बाप से भी अधिक हमारी पालना की, हमें दुलार दिया, जिसकी गोद में खेलकर हम छोटे से बड़े हुए, जिसके द्वारा हमें भगवान मिला, वरदान मिले और जिसने हम में अनेक विशेषताएँ भरीं, हमने अन्तिम संस्कार किया।

फिर शाम के समय अव्यक्त बाबा का प्रथम बार सन्देशी के तन में आना हुआ। बाबा ने दीदी दादी को यज्ञ की पूर्ण जिम्मेदारी दी। बाबा ने हम दोनों के सिर पर कलश रखा। अव्यक्त बाबा ने सन्देश दिया था—"बच्चे फिक्र न करो, बाबा तुम बच्चों के लिए वतन में तैयारी करने गया है। मेरा प्यारा बच्चा मेरे पास है। बाबा ने स्वयं को गुप्त कर शक्तियों को प्रत्यक्ष करने के लिए ये पार्ट बजाया है। ये बोल मेरे कानों में गूँजते रहते थे।"

इस प्रकार यज्ञ रूपी जहाज में अनेक वत्सों को बैठाकर, 33 वर्षों से जहाज को अनेक तूफ़ानों और विघ्नों के बीच सुरक्षित खेकर, जो नाविक असीम साहस के साथ, अडोलता पूर्वक चला आ रहा था, अब वह हमारे हाथों में जहाज की बागडोर देकर, हमारा पूर्ण सहयोगी बनने के लिये उड़कर वतन में जा बैठा।

तब से अब तक के आपके अनुभव क्या हैं ?

मुझे यह आभास रहता है कि बाबा सदा मेरे साथ है। वही सब कुछ कर रहा है। वह मेरे ऊपर है, मेरे कन्धों पर है, मेरे नयनों में है। मुझे बाबा की दिव्य प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। जैसे कि हम दीदी दादी बाबा की 2 भुजाएँ हैं, वही अपनी भुजाओं को चलाता है। कोई भी यज्ञ का जब बड़ा कार्य आता है तो मैं स्वयं को निमित्त ही समझती हूँ। मुझे कभी भी बोझ महसूस नहीं होता। जब कोई हमसे श्रीमत लेने आता है तो मैं तुरन्त योग-युक्त होकर बाबा से पूछ कर ही श्रीमत देती हूँ। मुझे यह भान नहीं रहता कि मैं श्रीमत दे रही हूँ। मुझे यह ख्याल रहता है कि यज्ञ में बाबा के अनेक बच्चे आते हैं, अपना अधिकार लेने। सभी बच्चे अपना अधिकार लेकर ही जाएँ।

अपनी पवित्रता की स्थिति के बारे में तो यही कहूँगी कि जैसे ही शुरू से ही बाबा ने मुझे सम्पूर्ण पवित्रता का वरदान दे दिया है। मुझे अपना जीवन पूर्णतया वरदानी लगता है।

दादी जी, आप यज्ञ का क्या स्वरूप देखना चाहती हैं ?

ये मधुबन बाबा का महान तीर्थ है। ये मधुबन, ज्ञान सागर ब्रह्मपुत्रा व नदियों का संगम है। सारी विश्व ही बाबा की है। अतः इस अब्बा के घर से प्रत्येक आत्मा अँचली ले ले। अपना अधिकार ले ले। यहाँ से सब शान्ति की अँचली ले जाएँ। सबको ज्ञान व योग की अँचली प्राप्त हो। यहीं से सब अँचली लेकर कल्याण को प्राप्त हों। इस शिव-बाबा के रुद्र गीता-ज्ञानयज्ञ में सभी अपने मनोविकारों की आहुति डालकर, अपने पापों को भस्म करके सुख शान्ति प्राप्त करें।

दादी जी, अब आपके मन में किस लक्ष्य को पाने की प्रेरणा रहती है ?

मुझे यह तीव्र प्रेरणा रहती है कि इस मधुबन पावर-हाउस में हम लाइट-हाउस बन कर रहें। ताकि बाबा के प्रकाश की किरणों से सर्व आत्माओं का अन्धकार दूर हो सके और सभी अपने घर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

सर्वश्रेष्ठ ऋषि– ब्रह्मा-बाबा

(जिन्हें हमें फॉलो करना है)

(दीदी मनमोहिनी, मधुबन, माउण्ट आबू)

संसार में रहते हुए भी जो संसार के प्रभाव से निर्लिप्त थे—ऐसे कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति में रहने वाले,सर्वश्रेष्ठ ऋषि ब्रह्मा बाबा की आरम्भ से ही मुझे निकटता प्राप्त हुई। जब मैं प्रथम दिन हैदराबाद में उनके निवास पर चल रहे उनके सत्संग में गई तो जाते ही मैं ने उनके मस्तक पर प्रकाश का चक्र देखा और इस चक्र ने ही मुझे सर्व साँसारिक चक्करों से मुक्त करके होवनहार चक्रवर्ती महाराजा बनने की ओर प्रेरित कर दिया। मैं इस प्रकाश-चक्र को देखती ही रही और देखते देखते मैं देह के भान से इतनी दूर चली गई कि मुझे सत्संग का ज़रा भी आभास नहीं रहा।

मेरा प्रारम्भ से ही जीवन, 'एक बल एक भरोसे' चला। मैंने बाबा के हर चरित्र व अखण्ड तपस्या को बहुत ही समीपता से देखा। हर मनुष्य समझ सकता है कि सृष्टि के प्रथम नम्बर की आत्मा सब से अधिक बुद्धिमान, सबसे अधिक शक्तिशाली व सबसे अधिक पावन रही होगी। ब्रह्मा बाबा वो आत्मा थी जिसने शिव-बाबा के हर बोल से अपने जीवन को रंग डाला था।

1968 का वर्ष याद आता है और उसमें बाबा का वो तपस्वी रूप नहीं भूलता जो आज भी बार-बार मुझे प्रेरित करता है, जब बाबा ने खेलना भी बन्द कर दिया था और बाबा अधिक समय झोंपड़ी में एकान्त में गहन मग्न स्थिति रूपी गुफा में लीन रहते थे। इस अन्तिम वर्ष में बाबा, निरन्तर योग की सर्वोच्च स्थिति पर पहुंच गए थे।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार—

सन्देश वाहक बहनें बहुत समय से अव्यक्त वतन में जाकर सम्पूर्ण ब्रह्मा का साक्षात्कार करती थीं। परन्तु अन्तिम दिनों में बाबा, यहीं पर फ़रिश्ते नज़र आने लगे थे। सूक्ष्म वतन के साक्षात्कार व प्रत्यक्ष ब्रह्मा बाबा में कोई अन्तर नहीं रह गया था। दूर से देखने पर पता लगता था कि बाबा के पग धरती पर नहीं हैं क्योंकि सचमुच ही बाबा धरती के आकर्षण से दूर वतन में रहने लगे थे। यह थी दधीचि ऋषि कीअन्तिम स्थिति जिसने अपनी हड्डियों को पूर्णतया यज्ञ में स्वाहा करके, फ़रिश्ता स्वरूप प्राप्त किया था।

'मैं-पन' का सम्पूर्ण त्याग—

ये महान तपस्वी 'मैं-पन के सम्पूर्ण त्याग' के कारण नम्बर वन को प्राप्त हुआ। त्याग तो अनेक वत्सों ने किया परन्तु वर्णन तो दूर, बाबा को तो अपने त्याग का एहसास भी नहीं था। बाबा कहा करते थे कि मुझे तो कोड़ियों के बदले स्वर्ग की बादशाही मिल गई। रूहानी आकर्षण से सम्पन्न वे किसी को अपनी ओर आकर्षित भी नहीं होने देते थे। वे कहा करते थे कि देहधारी को याद करोगे तो पाप के भागी होगे। बाबा अपना स्वरूप इतना साधारण रखते थे जो कोई समझ भी न पाए कि ये प्रजापिता ब्रह्मा हैं, परन्तु उनकी शालीनता व महानता प्रत्यक्ष उनके होवनहार विश्व-महाराजन की परछाई फेंकती थी। मान-शान की बात तो उनसे कोसों दूर थी।

बाबा अपने लिए कुछ भी नहीं रखते थे। कई बार हम बाबा को कहते थे कि बाबा इस टूटे-फूटे मकान को छोड़कर आप नए मकान में रहो। तो

बाबा कहते थे—

'बच्ची, शिव बाबा पुराने तन में, पुरानी दुनिया में आया है, बाबा तो पुराने मकान में ही रहेंगे। नए मकान नए बच्चों के लिए हैं।' ऐसा त्याग मूर्त्त और कोई नहीं हो सकता। एक बार किसी ने एक नई दरी भेजी, हमने बाबा से कहा, 'बाबा झोपड़ी से पुरानी दरी हटाकर नई दरी डाल दें'। बाबा ने कहा—'नहीं बच्ची, नई दरी बच्चों के काम आएगी'। कई बहनें बाबा के लिए नए स्वेटर व वस्त्र लाती थीं, बाबा उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए पहन लेते थे और अगले ही दिन बच्चों को दे देते थे। और बच्चे वे वस्त्र लेकर रात-दिन शिव बाबा को याद करते रहते थे। एक बार एक गरीब व्यक्ति बाबा से मिलने आया। उसकी धोती फटी थी। बाबा ने फौरन अपनी धोती को उतार कर उसे दे दी—'लो बच्चे, ये बांधो' उसके नयन भर आए और वह बाबा से लिपट गया। ऐसा अनुपम प्यार था बाबा को अपने बच्चों से।

जब कोई बच्चा बाबा का फोटो लेने के लिए कहता था तो बाबा कभी रुचि नहीं लेते थे। बाबा कहते थे—यह भक्त है। बाबा कहते थे—'जिसका तुम फोटो लेना चाहते हो, उसका फोटो तो आता ही नहीं। मेरा फोटो लेकर तुम क्या करोगे'। बाबा ने कभी किसी को अपने पैर नहीं छूने दिए। ऐसे महान थे बाबा, जिन्होंने स्वयं को पूर्णतया गुप्त रखा।

इस 'मैं-पन' के त्याग के कारण ही बाबा सदा निश्चिन्त व अडोल थे। यज्ञ रूपी जहाज़ को इस विषय सागर में कितने तूफ़ान लगे होंगे, कितनी निराशा की घड़ियां आई होंगी, परन्तु बाबा के चेहरे पर कभी चिंता की रेखाएँ नहीं देखी गई। बाबा कहा करते थे—'बच्ची, जिसके ये सब बच्चे हैं, उसे ही चिंता है। बाबा अपने बच्चों को भूखा थोड़े ही रक्खेगा।' यह थी बाबा की सम्पूर्ण समर्पणता, जो अनुकरणीय है। वास्तव में ब्रह्मा बाबा ने ही शिव-बाबा को पूर्ण रूपेण जाना था। यही कारण था कि इतने बड़े यज्ञ की व अनेक यज्ञ वत्सों की ज़िम्मेदारी सम्भालते हुए भी बाबा सबसे पहले कर्मातीत बन गए।

ब्रह्मा बाबा—सर्व श्रेष्ठ योगी—

हमने देखा कि बाबा बात करते करते ही बीच में ही गुम हो जाते थे, अर्थात् अशरीरी हो जाते थे। जैसे कि बातें सुनते हुए भी निर्लिप्त रहते थे। न तो बाबा विस्तार से सेवा समाचार सुनते थे और न ही विस्तार से उत्तर देते थे। जब मैं यज्ञ का चक्कर लगाने बाबा को साथ ले जाती थी तो बीच बीच में बाबा को याद की मस्ती में पाती थी। वाणी में आते भी बाबा वाणी से परे रहते थे और अपने दो महा वाक्यों से ही हमें भी वाणी से परे उड़ा ले जाते थे। कभी कभी मैं कुछ बात भी करती थी तो जैसे कि बाबा यहां हैं ही नहीं। फिर बाबा कहते थे, "हाँ—क्या कहा बच्ची—।"

अन्तिम दिनों में मैं जब भी बाबा के पास जाती थी, कमरे में सन्नाटा ही सन्नाटा नज़र आता था और मैं स्वयं भी अशरीरी हो जाती थी। कितनी ही देर तक तो बाबा से दृष्टि ही लेती रहती थी और यह भी भूल जाती थी कि मैं किस काम से आई थी।

जब मैं बाबा को भोजन खिलाती थी तो बाबा एकदम योग-युक्त, धीरे-धीरे भोजन ग्रहण करते थे, और बार-बार मुझे याद दिलाते थे, बच्ची, तू किसे भोजन खिला रही हो। बाबा मुझे कहते थे कि दीदी तुम पूछती रहो कि बाबा, शिव बाबा याद है, इतने निरहंकारी थे बाबा—

कभी कभी जब बाबा स्नान करते थे और कहीं से फोन आ जाता था, तो मैं जाती थी कि बाबा फोन आया है। तो बाबा हँसी में कहते थे, कि कह दो—मैं तो शिव पर लोटी चढ़ा रहा हूँ। इस प्रकार हर कर्म में बाबा ने योग को मनोरंजन का साधन बना लिया था।

बाबा का हर कर्म, योगयुक्त था। पत्र लिखते, सुनते, बच्चों से मिलते हुए बाबा, शिव बाबा के साथ रहते थे। यहाँ तक कि खेलते हुए तथा पिक-निक करते हुए भी बाबा उसी अलौकिक मस्ती में रहते थे। पिकनिक करते भी बाबा सभी को याद में रहने का इशारा देते रहते थे। बाबा कहते थे, नहीं तो शिव बाबा कहेंगे कि बच्चे खेल पाल में इतने मस्त हो गए जो बाप को भी भूल गए।

अन्तिम दिनों में—

बाबा के जीवन में शिव बाबा पूर्णतया समा-चुका था। बाबा का खान पान बहुत हल्का था और नींद तो पूर्णतया सतोप्रधान थी। जब भी मैं बाबा के पास जाती थी, सदा बाबा को जागती ज्योति ही पाती थी। और बाबा सदा कहते थे "आओ बच्ची" अन्तिम समय में बाबा का शरीर भी पूर्णतया हल्का महसूस होता था। 'योगियों के अंग अंग शीतल—' यह बाबा से स्पष्ट प्रतिभासित होता था। शुरू में मैंने बाबा के मस्तक पर प्रकाश चक्र देखा था और अन्त में उनका सारा शरीर प्रकाशमय दिखाई देता था।

एक आकर्षक दृश्य—

अन्तिम दिनों में बाबा प्रातः २.३० बजे उठ जाते थे और इस दुनिया से दूर चले जाते थे। फिर क्लास में एक घण्टा योग कराते थे। बाबा पूर्णतया लाइट हाउस नज़र आते थे। मानो इस महान भूमि से सम्पूर्ण जगत को शक्तियों का दान दे रहे हों। फिर बाबा बाहर आँगन में खड़े हो जाते थे और सामने सभी यज्ञ वत्स खड़े रहते थे। बाबा एक एक रूह को बल देते थे। यह दृश्य अति मनमोहक हो जाता था, ऐसा लगता था कि ज्ञान सूर्य व चन्द्रमा चेतन सितारों को प्रकाशित कर रहे हों। सभी देह व समय की सुधि बुधि भूलकर चकोर की तरह खड़े रहते थे। फिर कभी कभी बाबा महावाक्य भी बोलते थे—

"बच्चे, निराकारी स्थिति में हो या आकारी स्थिति में ?"

नारायणी नशे में बाबा—

बाबा की ईश्वरीय मस्ती चेहरे से झलकती थी। कभी कभी बाबा अपने भविष्य की याद में वर्तमान को पूर्णतया भूल जाते थे। बाबा भविष्य के विचारों में खोये बैठे रहते थे, फिर जब गद्दी से उठते थे तो सामने शीशे में देखकर कहते थे—

"दीदी, मैं तो छोटा कृष्ण हूँ, ये क्या, ये तो मेरा बूढ़ा शरीर है ! नहीं-नहीं, मैं तो छोटा सा कृष्ण हूँ" हम सब यह दृश्य देख कर हँसने लगते थे। उस बाबा के चेहरे पर श्री कृष्ण जैसे बचपन के चिन्ह नज़र आते थे।

अन्तिम दिनों में तो ऐसा लगता था जैसे कि बाबा सदा ही शिव बाबा से बातें करते रहते हैं। सदा मग्न देखने में आते थे बाबा। बाबा के आस-पास सन्नाटा ही सन्नाटा नज़र आता था। जिस पर भी बाबा की दृष्टि पड़ जाती थी, वह तुरन्त ही शरीर से न्यारा हो जाता था। बाबा के सामने आते ही किसी को भी ज्यादा बात करने की इच्छा नहीं होती थी और स्वतः ही सर्व समस्याओं का समाधान मिल जाता था।

यह थी बाबा की अन्तिम तपस्या जिससे बाबा सम्पूर्ण फ़रिश्ते बने। हम भी बाबा जैसी अधिक मेहनत, सम्पूर्ण त्याग, सम्पूर्ण निर्माणता और समर्पणता को धारण करके ही उन जैसा फ़रिश्ता बन सकेंगे। बाबा मुझे कहा करते थे—

"बच्ची, बाबा बच्चों को जिम्मेदारी देते हैं, परन्तु जो बच्चे स्वयं को निमित्त समझ कर, शिव बाबा पर ज़िम्मेदारी रखकर पुरुषार्थ करते हैं, वे सफल होते हैं।"

जब अव्यक्त बाप-दादा ने हमें निमित्त बनाया तो वरदान दिया था—**'बच्ची जैसे तुम साकार में अँगुली पकड़कर बाबा को बच्चों से मिलाने ले जाती थी, वैसे अब बाबा को अँगुली पकड़कर साथ ले जाना।'**

यह वरदान मेरे साथ है और मैं सदा बाबा को अपने साथ ही पाती हूँ। जब मैं सवेरे उठती हूँ तो बाबा के इशारे मिलते हैं और बाबा के फ़रमान भी मिलते हैं और मैं पूर्णतया लवलीन हो जाती हूँ। □

क्लास के लिए प्रश्न

इस मास निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार कीजिए, उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

1. ज्ञान मार्ग पर चलते-चलते यदि किसी अच्छे ज्ञानवान का पुरुषार्थ ठंडा हो जाता है तो उसका सूक्ष्म कारण कौन सा होता है ?

2. वह कौन सी सेना है जिसकी सहायता से हम विकारों रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं ?

याद आती है, प्यारे बाबा की तपस्या

ब्र० कु० बृजइन्द्रा, बम्बई

उनके अनुपम भाग्य का कैसे वर्णन करें, जिन्होंने भगवान को इस धरा पर अवतरित होते देखा ! धन्य हैं ये दादी बृज इन्द्रा जो आदरणीय दादा के लौकिक घर में पुत्र-वधु के रूप में आई थीं। आपका बचपन का नाम राधा था। पुत्र-वधु रूप में रहते हुए २ वर्ष बीते थे कि दादा का अलौकिक पार्ट प्रारम्भ हुआ। दादीं जी ने सभी दिव्य घटनाएं अपने नयनों से देखी। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के बाद दादी जी का पिताश्री जी से बहुत सामिप्य रहा और आप ईश्वरीय कार्य में पूर्ण सहयोगी रहीं। वर्तमान समय आप इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के महाराष्ट्र जोन की इन्चार्ज हैं। आपका दिव्यता बिखेरता हुआ चेहरा, मनुष्यों को अन्तर्मुखी कर देता है। आप त्याग और तपस्या की साक्षात प्रति मूर्ति हैं। आपके सरल भावों में ही बाबा के साथ आपका अनुभव पढ़िए ·····। (सम्पादक)

भले ही पूर्णिमा का चन्द्रमा जग वालों के आकर्षण का केन्द्र रहता हो, परन्तु चन्द्रमा की कलाएं समाप्त होते होते जब एक लाइन मात्र रह जाती हैं, तो भी वह लोगों के मन को खींचता रहता है। प्रजापिता ब्रह्मा जो कि सतयुग में सम्पूर्ण सतो प्रधान थे, पूरा सृष्टि चक्र समाप्त करने के बाद, अपने अन्तिम ८४वें जन्म में भी एक दिव्य पुरुष थे। मैंने बाबा के मुख से कभी गाली या अपशब्द नहीं सुने थे। बाबा का खान पान पूर्णतया सात्विक था, राजाओं महाराजाओं की पार्टी में, उनकी माँग पर भी बाबा तामसिक भोजन नहीं देते थे। बाबा बहुत ही सम्मान प्राप्त व्यक्ति थे। बाबा की दान वृत्ति व परोपकारी भावना, सचमुच ही अनुकरणीय थी। जब बाबा कोई विशेष पूजा पाठ कराते, या तीर्थ यात्रा करते, तो अन्त में हाथ में जल अँचली लेकर कहते थे···इसका पुण्य सर्व आत्माओं प्रति हो···। मैं सोचती थी कि सच ही बाबा को कुछ भी नहीं चाहिए। कितने महान थे हमारे बाबा···।

जब से बाबा ने अपना सर्वस्व स्वाह किया, फिर कभी पैसा देखा नहीं था। एक बार मैं बाबा को एक पैसे का सिक्का दिखाने गई, जो तांबे का बना था तथा बीच में गोलाई में कटा हुआ था। मैंने कहा, देखो बाबा, यह क्या है ? बाबा ने कहा—"वाशर होगा"—। जब मैंने बताया कि ये पैसा है ,तो बाबा आश्चर्य से कहने लगे कि देखो बच्ची भारत कितना गरीब हो गया है। सतयुग में हीरे सोने के सिक्के थे और अब ताँबे के बनाये और उसे भी बीच से काट दिया !

ऐसे तो बाबा बहुत ही विनोदी प्रकृति के थे, परन्तु जैसे ही बाबा को दिव्य अनुभव हुए तो बाबा एकदम अन्तर्मुखी हो गये। हम परिवार वाले यह सब देखकर हैरान थे कि बाबा को अचानक ही क्या हो गया। जब बाबा सीढ़ी द्वारा ऊपर से नीचे उतरते थे, तो मैं बाबा को देखती ही रहती थी। यह स्पष्ट होता था कि बाबा अब इस जगत में नहीं हैं।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार—

मैं प्रति दिन बाबा को भोजन देने जाती थी। परन्तु अब बाबा कहीं दूर-दूर खोये-खोये लगते थे। जब मैं कहती थी कि बाबा भोजन कर लो, तब कहीं बाबा का ध्यान भंग होता था।

ऐसे ही एक दिन जब मैं भोजन लेकर गई तो मुझे वहाँ साक्षात् विष्णु बैठे दिखाई दिये। मैं तो आश्चर्य में खोई, सब कुछ भूली सी, उस दिव्यता को निहारती ही रही। परन्तु पलक झपकते ही मैंने पाया कि वहाँ तो स्वयं दादा जी बैठे थे। इसके बाद वहाँ मुझे कभी दादा जी दिखाई देते थे और कभी साक्षात् विष्ण। मैं भोजन देना तो भल ही गई।

मुझे अथाह खुशी थी कि दादा को कोई असीम सिद्धि प्राप्त हो गई है। क्योंकि काफी समय से मैं बाबा को अखण्ड तपस्या में लीन देखती चली आ रही थी।

मैं खुशी खुशी इस दिव्य साक्षात्कार का वर्णन अपने घर वालों से कर रही थी। जब मैं दूसरी बार भोजन लेकर गई तो दादा की जगह मुझे कृष्ण बैठे नज़र आये और मुझे ऐसा आभास हुआ कि जैसे श्री कृष्ण हमारा अपना है, और तुरन्त ही श्रीकृष्ण लुप्त हो गये और मैंने देखा कि वहाँ तो स्वयं दादा जी ही बैठे थे। तब उनके चेहरे पर दिव्य तेज था, नयनों में अलौकिकता थी। इन घटनाओं को देख मैं खुशी से नत्य करती रहती थी और सोचती थी कि मेरे पुण्य उदय हुए हैं जो मैं ऐसे महान पुरुष के घर आ गई हूँ।

मेरा अलौकिक जीवन प्रारम्भ—

इन घटनाओं के बाद मैं देखती थी कि बाबा बहुत समय योग-तपस्या में बैठे रहते थे। वे अधिक समय एकान्त में ही रहते थे तथा कार्य व्यवहार से उपराम होते जा रहे थे।

एक दिन जब में बाबा के पास फल लेकर गई तो मैंने क्या देखा—

बाबा का कमरा श्वेत दिव्य प्रकाश से आच्छादित है और बाबा से चारों ओर प्रकाश की किरणें फैल रही हैं। दृश्य अति मनमोहक था। ऐसा लगता था जैसे कि ज्ञान-सूर्य संपूर्ण जगत में अपना प्रकाश फैला रहा हो।

इस दृश्य को देखने में मैं अपनो सुध-बुध इतनी भूल गई कि थाली मेरे हाथ से गिर गई। आवाज़ सुनकर एकाग्रचित्त बैठे बाबा ने मेरी ओर देखा और मैं बाबा को देखती ही रह गई, मैं देह का भान भूल गई, लौकिक सम्बन्ध भूल गई और ईश प्रेम में रँग गई।

उस दिन से मेरा घूँघट खुल गया और मैंने स्वयँ को बाबा की जन्म-पुत्री स्वीकार कर लिया। इस घटना के बाद मेरे जीवन की साँसारिकता समाप्त हो गई और मेरा जीवन अविरल गति से अलौकिकता की ओर बह चला। एक दिन बाबा कुछ लिख रहे थे। बाबा ने मुझे दिखाया। लिखा था—

काहे कारण तूने योग कमाया,
काहे कारण तूने छोड़ा सँसार।

फिर तो मुझे रुहानी रँग इतना लगा कि उस अलौकिक मस्ती में मैं सभी विघ्न पार कर गई। मैं बाबा की पुत्र-वधु से अब जन्म-पुत्री बन चुकी थी। यह परिवर्तन मेरे पियर घर वालों को न जँचा और उन्होंने मुझे रोकना चाहा, परन्तु भला ईश्वरीय रँग में रँगी आत्मा को कौन रोक सकता है। और प्रभु-मिलन के आगे विघ्नों का मूल्य भी क्या है ?

इसी के आस पास बाबा को ५ इष्ट देवों का साक्षात्कार हुआ था और बाबा उनसे गले मिले थे। बाबा ने उनसे अपनत्व महसूस किया था। तब बाबा को यह आभास नहीं था कि "मैं ही ये हूँ।" उन्होंने बाबा को तत् त्वम् का वरदान दिया। इसके बाद तो बाबा का तपस्वी रूप बढ़ता ही गया। अशरीरीपन का अभ्यास बाबा ने रात दिन किया। बाबा की तपस्या का प्रवाह चारों ओर फैलने लगा था।

चाँद की चाँदनी में चमकता सूर्य सा चेहरा—

बाबा की लग्न दिनों दिन बढ़ रही थी। एक रात्रि को बाबा मूलचन्द काका की कोठी पर गये थे। मैंने पीछे से रसोइये को दूध देकर भेजा। रसोइये ने बाबा के वहाँ न होने की खबर दी। यह जान कर खोज शुरू हुई। बाबा का बड़ा भाई दादा नवल राय था। वह बहुत नाराज़ हुआ कि इसे क्या हो गया है, और कार लेकर चला बाबा को ढूँढने।

उस दिन चन्द्र अपनी पूर्ण छटा बिखेर रहा था। दादा नवल राय ने बहुत दूर चर्च के पास एक छोटी सी पहाड़ी पर किसी व्यक्ति को बैठे देखा। वह खोजते हुए वहाँ पहुँचे तो देखा "कि चाँद की चन्द्रिका में दादा का चेहरा सूर्य सा चमक रहा है और दादा बहुत ही लवलीन बैठे हैं।" उस शान्ति के स्पन्दनों में दादा नवल राय के मन की अग्नि भी शान्त हो गई। बाबा को उनके आने का आभास भी न हुआ। दादा नवल राय कुछ क्षणों तक अवाक् खड़े बाबा को देखते ही रहे। फिर उन्होंने बाबा की पीठ थपथपाई और कहा—"भाऊ कहाँ हो ? मालूम है, क्या बजा है ?" तब बाबा को नीचे का भान हुआ। उस समय रात्री का एक बजा था। बाबा वापिस

घर गये।

जब तक शिव बाबा ने दादा को ब्रह्मा नाम दिया, दादा पूर्ण रूपेण उस योग्य हो चुके थे। बाबा ने निरन्तर तपस्या से अपने तन, मन को कँचन कर लिया था। उस तपस्या के बल से बाबा के चेहरे पर इतनी दिव्यता आ चुकी थी कि जो भी उनसे मिलता था, उन्हें अपना अलौकिक पिता स्वीकार कर लेता था। इस प्रकार मेरे जीवन का आदिकाल भी सृष्टि के उस दिव्य पुरुष के साथ बीता।

एक बार शिव-बाबा ने कहा था कि ये बच्चा ब्रह्मा बड़ी शक्ति शाली आत्मा है। इसे भी साकार आलमाइटी अथार्टी कह सकते हैं, क्योंकि यह आत्मा नई दुनिया रचकर उस पर राज्य करती है। इनकी यह भी विशेषता है कि सतयुग के बाकी राजा भी इन्हें फालो करते हैं। "इनकी राज्य सभा व प्रजा से पुत्र जैसा व्यवहार—इनसे ही सब राजा सीखते हैं। इसलिए इनका साधारण तन देख कर गफ्लत में न रहना। यह बहुत शक्तिवान तथा प्रेम स्वरूप आत्मा (Most powerfut & loveful soul) है।

इस प्रकार बाबा के सँग रहते हुये, बाबा की विचित्र लीला देखते हुये हम आगे बढ़ते आये। बाबा की एक बहुत बड़ी विशेषता थी कि बाबा हम सभी माताओं का बहुत आदर करते थे। हममें साहस भरते थे, आत्म-विश्वास जागृत करते थे और बार बार हमें हमारे शक्ति रूप की याद दिलाते थे। मुझ अबोध नारी को बाबा ने बहुत आगे बढ़ाया। बहुत योग्य बनाया, यह सब याद करके बाबा के प्यार में नयन भर आते हैं और मैं अपने को अति भाग्यवान मानती हूँ कि मेरा अन्तिम जन्म भी बाबा की सर्वश्रेष्ठ आत्मा के साथ व्यतीत हुआ और मुझे आभास होता है कि मैं पूरे ८४ जन्मों में भी किसी न किसी नाम, रूप व सम्बन्ध में उनके समीप रहूँगी।"

(कविता)

हमने सुना है

ब्र० कु० लक्ष्मी चन्द, रुड़की

हमने सुना है तुम, ब्रह्मा में आये थे
बच्चे बना के सबको, गोद खिलाये थे।
हमने सुना·····
सुनी है कहानी तेरी, सृष्टि सृजन की,
रूहों के संग तेरी, मधुर मिलन की,
ब्रह्मा के मुख से तुमने, रत्न लुटाए थे।
हमने सुना है·····
सुना है तुम रूहों के, मन को रिझाते थे
मुरझाये फूलों को फिर से, खिलाते थे,
नजरों से सब पर, सुख बरसाये थे।
हमने सुना है·····
सुनी है तुम्हारी हमने, दिव्य कहानी,
वत्सों को देते थे, अमिट निशानी,
कर्म अलौकिक तुमने, करके दिखाये थे।
हमने सुना है·····

कहते हैं लाल तेरे, संग जो रहे थे,
बच्चों के खातिर तुमने, कष्ट भी सहे थे
अमर पद देने को, धरती पे आये थे।
हमने सुना है·····
सुनता हूँ जब तेरी, प्यारी-प्यारी बातें,
नयन छलकते हैं, सारी सारी रातें,
वीरान जग में तुमने, फूल खिलाये थे।
हमने सुना है·····
ऐसे तो बाबा तुम, आज भी आते हो,
नन्हें मुन्ने बच्चों की प्यास बुझाते हो,
पर थे निराले वे, दिन जो बिताये थे।
हमने सुना है·····

ब्रह्मा बाबा के जीवन सम्पर्क के कुछ अनुभव मोती

★ ★ ★ ★ ★

(ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई)

परमपिता परमात्मा शिवके साकार माध्यम ब्रह्मा बाबा के साथ करीब १९५६ साल में मिलन हुआ। उनका प्रथम दर्शन बम्बई के हरिकिशनदास हास्पिटल में हुआ था। शान्ति, क्रांति तथा ओजसयुक्त उनका दैदीप्यमान मुखारविंद था। हास्पिटल के पलंग पर सोये हुए ब्रह्मा बाबा के उस गौरव पूर्ण शरीर को देखकर मुझे अजंटा-इलोरा के गुफ़ाओं में शिला पर लेटे हुए गौतम बुद्ध की प्रतिमा याद आ गई। धर्मस्थापक जितनी उनकी तेजस्वी प्रतिमा थी। उन्हें देखने से ही उनके गुण, शक्ति तथा बुद्धिबल की भव्यता समझ में आ गई। प्रथम दिन से ही मिलने वालों पर अपना भव्य प्रभाव डाल सके ऐसी उनकी शारीरिक प्रतिमा थी। लँबा कद, गौर वर्ण का चमकीला रंग तथा सुलक्षण और सुरेख अंग यह उनके शरीर की विशेषता थी।

उनके व्यवहार में मिठास, स्नेह तथा प्रेम भरा हुआ था। वे सबके अलौकिक पिता थे। इसी कारण सबके प्रति अपने बच्चों की प्रेमभरी दृष्टि से व्यवहार कर सकते थे। यह बात मैं सदा मीठे ब्रह्मा बाबा से सीखने का पुरुषार्थ करता रहा कि जैसे ब्रह्मा बाबा स्वयं सबके अलौकिक पिता हैं और उसी दृष्टि और सम्बन्ध से व्यवहार कर सकते हैं तो मैं भी क्यों नहीं, मेरा जो पार्ट है उसी के आधार पर मैं सबको आत्मिक दृष्टि से भाई-भाई तथा शरीर के आधार पर भाई-भाई या भाई-बहन के सम्बन्ध से सबको अपना भाई या बहन समझूँ और उसी दृष्टि से उन्हों के साथ सदा व्यवहार करूं। सामने वाला तो अज्ञानी है, इसलिए वह ब्रह्मा बाबा को अपना अलौकिक पिता न भी समझे परन्तु जैसे लौकिक व्यवहार में भी गाया है कि बच्चे कपूत बन सकेंगे परन्तु माँ-बाप तो कभी भी अपने बच्चों के साथ दुष्ट व्यवहार नहीं करेंगे। उसी तरह अज्ञानी या पराए व्यक्ति के साथ भी ब्रह्मा बाबा अलौकिक पुत्र के नाते से व्यवहार करते थे। तो क्यों नहीं हम बच्चे भी सबके साथ अलौकिक संबंध के आधार से या आत्मिक संबंध के आधार पर भाई-भाई की दृष्टि रख व्यवहार करें, शास्त्रों में भी "वसुधैव कुटुंबकम्" का गायन है परन्तु उसी गायन योग्य व्यवहार आज की कलियुगी सृष्टि में कोई नहीं करता। सतयुग में एक दैवी परिवार होगा उसी का सबूत मीठे ब्रह्मा बाबा ने एक आदर्श बन व्यवहार में करके दिखाया, ऐसे व्यवहार के आधार पर ही वे सदा सबके प्रति रहमदिल रहते थे।

पिताश्री जी अपने पूर्वकाल में भी, रहमदिल होने के कारण जब तर्पण करते थे तब अन्त में विश्व की सर्व आत्माओं प्रति तर्पण की अंचली देते थे। अर्थात् विश्व की सभी आत्माओं का कल्याण हो— ऐसा शुभ संकल्प सदा करते थे। इतनी विशाल बेहद की भावना अगर सबकी हो जाए तो इस विश्व में व्याप्त कलह कलेश की दूषित मनोभावना कब से खत्म हो गई होतीं।

ब्रह्मा बाबा का त्याग अपूर्व है। अथाह संपत्ति के वे मालिक थे। जब उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया तब सब कुछ स्वाहा अर्थात् समर्पित कर दिया, कुछ भी अपनी आयवेला के लिए या अपने परिवार के लिए अलग नहीं रखा। उसी समय तो इस ईश्वरीय ज्ञान और योग का प्रारम्भ था। अनेक प्रकार की अनिश्चितता थी। संयोग विपरीत होंगे, या अनुकूल होंगे उसका कोई पक्का भरोसा न था। फिर भी उसी समय अपने लौकिक धन का सम्पूर्ण त्याग तथा लौकिक व्यवहार का अर्थात् देह के संबंधों का त्याग अर्थात् उन्हों के प्रति दृष्टि परिवर्तन कर ब्रह्मा बाबा ने एक बहुत बड़ा कर्तव्य किया कल तक जो पत्नि, पुत्र, पुत्री, बहू, पोते आदि थे वे सब आज से मेरे देह के संबंधी नहीं परन्तु आत्मा के संबंधी हैं। ऐसा भावनायुक्त व्यवहार करना कोई सामान्य कार्य नहीं

है। हम सबने इसी शरीर में ८३वें जन्म के आधार पर जो देह के संबंधी हैं उन्हों को अपने ८४ वें जन्म के आधार पर परिवर्तित किए हैं? संबंध अनित्य है, परिवर्तनीय है, संसार यही है और जीवन भी यही है। संबंध जीवन बँधका आधार है। तो जीवनमुक्ति का भी आधार है। ब्रह्मा-बाबा ने अनित्य संबंधों का संन्यासियों की तरह त्याग नहीं किया परन्तु साथ में रहते उन्हों के प्रति दृष्टि विंदु था वह परिवर्तन किया। संन्यासियों द्वारा किए गए संबंधों के त्याग में संबंध और व्यक्ति दोनों के न्याय की बात आती है। और ब्रह्मा बाबा ने त्याग का नया रूप बताया अर्थात् संबंधों का त्याग, परन्तु व्यक्तियों का त्याग नहीं क्योंकि यही व्यक्ति अर्थात् आत्माओं के साथ सारे कल्प में हमें अपने लौकिक संबंध बाँधना ही है।

जब १९६१ साल में ब्रह्मा बाबा बंबई में आए तब प्रतिदिन प्रातः वहाँ एक बगीचे (Hanging garden) में प्रातः थोड़ा समय पैदल करने के लिए जाते थे, उसी समय पर अपने कल्पवृक्ष तथा त्रिमूर्ति के चित्रों का छोटा ४ पन्ने का फोल्डर छपा था। रोज प्रातः ब्रह्मा बाबा हमें झाड़ त्रिमूर्ति को कैसे सबको समझाया जाए वह बताते थे। अलग अलग व्यक्ति को नए नए ढंग से कैसे समझाना जरूरी है, वह बाबा हमें सिखाते थे गीता में तो है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र के मैदान में ज्ञान दिया। परन्तु हमें तो ऐसा लगता था कि हमें ब्रह्मा बाबा ने इस बगीचा रूपी मैदान में सेवा अर्थ ईश्वरीय ज्ञान दिया। हम उसी ज्ञान के आधार पर उस व्यक्ति को समझाकर आते थे तो फिर ब्रह्मा बाबा पूछते थे कि उस व्यक्ति ने कौन कौन से प्रश्न किए और हमने क्या क्या जबाब दिए। उसमें फिर ब्रह्मा बाबा (Correction) करेक्शन देते थे। उन्हीं दिनों में एक बार दोपहर में अमेरिका-लास एंजीलिस की एकयोगिनी बहन आई थी। उसको मिलने का समय दोपहर के 1.30 बजे था। हमको ब्रह्मा बाबा ने अपने पास बुलाया और अन्त तक उपदेश (Instructions) देते गए। लिफ्ट (Lift) ऊपर आ रही थी, तब तक और लिफ्ट में हम अन्दर गए तब तक बाबा, ज्ञान कैसे समझाना— यह बताते गए। मैंने उसी समय पर बाबा को कहा "बाबा आप नंगे पांव क्यों यहां तक आए हो, तब बाबा ने कहा "बच्चों को मैं संपूर्ण सजधज करके सेवा अर्थ भेजूँ, तो बच्चे कमाल करके दिखावें।" अर्थात् ब्रह्मा बाबा संपूर्ण बने क्योंकि हरेक कर्म को संपूर्ण रूप से करते थे। हर कर्म में पूर्णतया (Perfection) आएगी तब हमारी अवस्था संपूर्ण बनेगी। संपूर्णता को हम संपूर्ण कर्म (Perfect action) द्वारा ही पा सकेंगे। और यही आशा सदा ब्रह्मा बाबा को रहती थी कि मेरे बच्चे जल्दी जल्दी संपूर्ण बनें। संपूर्ण बनने में समय का इन्तज़ार न करें। तो आने वाली १८ जनवरी पर हम सब बच्चे हमारे अति प्रिय ब्रह्मा बाबा की यह शुभ कामना और भावना जरूर पूर्ण करें कि हम सब अपने कर्मों के आधार पर जल्दी संपूर्ण बन जाएं।

अंजार में हुए समारोह में ब्र० कु० उमा भ्राता देसाई जी को चित्र भेंट करते हुए। ब्र० कु० उर्मिला तथा अन्य साथ में हैं।

यादें

(ब्र० कु० मोहन, देहरादून)

साकार बाबा के अव्यक्त होने से कुछ दिन पूर्व मैं बाबा से मिलने मधुबन गया हुआ था। रात्रि में २.०० बजे थे। वातावरण में गहरी शान्ति छाई हुई थी। कड़ाके की ठँड पड़ रही थी। मधुबन में प्रत्येक व्यक्ति आराम कर रहा था। मैं भी शान्ति मे सो रहा था। इतने में मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि बाबा योग-मुद्रा में बैठे हुए हैं। उनके सिर के चारों तरफ प्रकाश का एक ताज था। बाबा के चारों तरफ सुनहरे लाल रँग का प्रकाश था। मैंने देखा कि बाबा मुझे बुला रहे थे। मैं बाबा की तरफ बढ़ा ही था कि मेरी नींद एकाएक खुल गई, मैं जाग गया। मन में एक विचार लेकर मैं उठा। ड्रैसिंग गाउन पहनकर मैं बाबा के कमरे की ओर चल दिया, बाबा के कमरे में लाल रँग का प्रकाश था। कमरे में झांकने पर मैं स्तब्ध रह गया। मुझे अपनी आँखों पर जैसे कि विश्वास ही नहीं हो रहा था। जो दृश्य अभी थोड़ी देर पहले मैंने स्वप्न में देखा था, वह अब मैं प्रत्यक्ष रूप से देख रहा था। बाबा पदमासन लगाए गहन योग में बैठे थे। आँखों से इतना प्रकाश निकल रहा था जैसे कि हज़ार वाट के दो बल्ब जल रहे हों। बाबा एक प्रकाश स्तम्भ की तरह प्रतीत हो रहे थे जिनसे कि प्रकाश की किरणें चारों ओर फैल रही थीं। यद्यपि मैं उस समय बाबा से मिलने का बहुत इच्छुक था किन्तु बाबा को डिस्टर्ब (Disturb) न करने के ख्याल से मैं उनके पास नहीं गया। ऐसे थे हमारे मीठे बाबा, जिनके पास विश्राम करने के लिए भी समय न था, उनका सारा समय विश्व सेवा में ही व्यतीत होता था। □

प्रश्नों के उत्तर

(पिछले अंक में पृष्ठ २८ पर जो प्रश्न प्रकाशित हुए थे उनके उत्तर)

प्रश्न—कदम कदम में पदमों की कमाई का सहज साधन कौन सा है?

उत्तर—सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ, जैसे एक पर बिन्दी लगाने से दस बनता और दो बिन्दी लगाने से १०० बन जाता अर्थात् बिन्दी जमा करने से वृद्धि होती जाती, वैसे यहां भी सिर्फ़ बिन्दी लगानी है, बिन्दु वन बिन्दु के याद में रहना अर्थात् बिन्दी लगाना। एक से पदमगुणा कमाई का सहज साधन है।

प्रश्न—कर्म बंधन से मुक्त-स्थिति का अनुभव करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

उत्तर—कर्म बन्धन से मुक्त-स्थिति का अनुभव करने के लिए पुरुषार्थ है कर्मयोगी बनने का। कर्म-योगी बन कर्म करने वाले कभी कर्मबंधन में नहीं आते। वे सदा बंधनमुक्त योगयुक्त होते हैं। कर्मयोगी अच्छे या बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आवे तो उसके साथ खुशी में आ जाए और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आवे तो गुस्से में आ जाए या उसके प्रति ईर्ष्या या घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबंधन है। कर्म योगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए, सदा स्वयं न्यारा और प्यारा रहेगा। नालेज द्वारा जानेगा कि इसका पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा की, तो यह हुआ कर्म बंधन। कर्म बंधन वाला एक रस नहीं रह सकता। अच्छे को अच्छा समझ साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की दृष्टि से परिवर्तन कर शुभ भावना से साक्षी हो कर देखो—इसको कहा जाता है कर्म बंधन से न्यारा।

प्रश्न—पुण्यात्मा बनने के लिए किस स्मृति में निरंतर रहें?

उत्तर—लाइट व माइट हाउस समझने से कोई भी पाप कर्म नहीं होगा। जहां लाइट होती है वहाँ पाप नहीं होता। लाइट-माइट हाउस के स्वरूप में रहने से माया कोई पापकर्म करा ही नहीं सकती। सदा पुण्य आत्मा बन जाएंगे। पाप वहां होता है जहाँ बाप की याद नहीं होती। जब पुण्य आत्मा के बच्चे हैं तो पाप खत्म।

"ब्रह्मा का आह्वान"

(ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, आबू)

तुम हो परमपिता शिव की रूहानी सन्तान।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा बाबा का आह्वान ॥

आज पुकारे इष्ट देव को, कलियुग का इन्सान।
दिव्य गुणों को धारण करके, करो गुणों का दान।
इस जगत में परम पूज्य, तुम हो रूहें महान्।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा का आह्वान।

राज योग से पाकर शक्ति, करो विश्व कल्याण।
ललकारो माया को, मिटाओ उसका नाम निशान।
स्वमान में रहो, नहीं होंगे मन में परेशान।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा का आह्वान—

चरम सीमा पर पहुँच गया है आज यहां विज्ञान।
फिर भी तड़प रहा है, देखो दुख से ये इन्सान।
बनकर शाँति का स्तम्भ, दो शाँति का दान।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा का आह्वान।

देरी नहीं विनाश को, पूरा होना ये संगम।
इन्तज़ार की घड़ियाँ बीती, पहनों ज्ञान के कंगन।
वरना अन्त में आँसुओं से बेचैन होंगे नयन।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा का आह्वान—

प्रत्यक्ष होने जा रहे, पास खड़ा इम्तिहान।
धारणा मूर्त बन जाओ, बनो बाप समान।
क्योंकि थोड़े दिन के, अब जग में तुम मेहमान।
सम्पूर्ण बन जाओ, यही है ब्रह्मा का आह्वान।

तिरुपति में निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह में (दाएं से) ब्र० कु० शिव कन्या, रमेश शाह, जी. नागेश्वर राव एन्डोमेन्ट मन्त्री, आ० प्र०, ब्र०कु० सुन्दरी, ब्र० कु० ऊषा तथा अन्य।

राजा जनक ने विद्वानों को बन्दी क्यों बनाया ?

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी, शक्तिनगर, दिल्ली

प्यारे बच्चो,

प्यारे बाबा हम सभी को—चाहे वे छोटी आयु के हों, चाहे बड़ी आयु के—'बच्चे शब्द से तो सम्बोधित करते ही थे परन्तु इसके साथ वे कई बार गहन ज्ञान को भी ऐसे सुनाने लगते जैसे कि एक कहानी हो। मनुष्यात्माओं के '८४ के चक्र' अर्थात आवागमन के चक्र को वे ८४ जन्मों की कहानी के रूप में सुनाते। सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अन्त तक वृत्तान्त सुनाते समय वे शुरू में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते जैसे बच्चों की कहानियों में प्रायः प्रयोग किए जाते हैं। मेरे कहने का भाव यह है कि वे सतयुग का वृत्तान्त शुरू करने से पहले कहते कि —"एक बार की बात है···" (Once upon a time) कि वैकुण्ठ में एक राजा राज्य करता था। जिसका नाम था—श्री नारायण। उसकी रानी बहुत ही सुन्दर, सुशील, सुमधुर और गुणवान थी। उसका नाम था—लक्ष्मी···। इसी प्रकार, वे उदाहरण देकर कहते कि "जैसे एक दादा अपने पोतों को कहानी सुनाता है, वैसे ही शिव बाबा भी इस बूढ़े ब्रह्मा तन द्वारा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की कहानी सुनाता है। बच्चे, यह कहानी तो बहुत सहज है, इसे छोटे बच्चे भी समझ और समझा सकते हैं और फिर तुम तो बड़े हो; क्या यह कहानी सुनकर दूसरों को नहीं सुना सकते ?" बाबा कहते— और जो कहानियों की चौपड़ियां (पुस्तकें) छपी हुई मिलती हैं, वे तो पाई पैसे की रोचक कहानियाँ हैं। उनको पढ़ने से मनुष्य का जीवन दिव्य थोड़े ही बनता है। उनको पढ़ा, दिल बहलाया और खलास (खत्म)। परन्तु शिव बाबा जो कहानी सुनाते हैं, यह तो बहुत मशहूर है। इसका तो शास्त्रों में गायन है। इसी के बारे में ही कहा गया है कि शिव ने 'अमर कथा' सुनाई। वास्तव में सच्ची-सच्ची 'सत्यरारायण की कथा' भी यही है। इसे ही 'तीजरी की कथा' भी कहते हैं। राम कथा और महाभारत की कथा भी शिव बाबा के कर्त्तव्य को लेकर ही बनी हुई है। इस प्रकार, बाबा हरेक कथा के सत्य सार को समझाते और निष्कर्ष में कहते कि—"तुम बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो ! ये सब कथाएं तुम्हारे ही वृत्तान्त का वर्णन करती हैं। संगम युग में आपका जो शिव बाबा से अलौकिक जीवन यापन हुआ, उसी में से कुछ अंश लेकर किसी ने भगवान का गोप गोपियों के साथ प्रसंग लेख डाला तो किसी ने माया मारीच को मारने की अथवा रावण रूपी असुर का संहार करने की कहानी को विस्तार देकर रोचक ढंग से लिख डाला। परन्तु यह कैसी विचित्र गति है कि आज बड़े बड़े विद्वान और पण्डित भी इन कथाओं को गाकर अथवा नाटक रूप देकर इसकी पुनरावृत्ति तो करते हैं परन्तु इसके सही रहस्य को नहीं जानते।

बाबा ज्ञान मुरली सुनाने के बाद जब 'चेम्बर' (Chamber) में बैठते तब भी ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए कई बार छोटी-छोटी कहानियां, जिन्हें वे 'आखानी' (आख्यान) कहते, सुनाया करते। बाबा कभी भी लम्बी-लम्बी, घण्टों समय लेने वाली कहानियाँ नहीं सुनाते। अगर कभी किसी पुराण, चन्द्र-

कान्त वेदान्त या योग वशिष्ठ आदि की कहानी का वे हवाला देते तो भी वे संक्षेप में ही उसे उद्धृत करते।

बाबा कई बार कई कहानियों को 'दन्त कथा' की संज्ञा देते और अन्य कई कहानियों को रोचक कथा की। बाबा कहते कि इनका अर्थ कुछ भी नहीं बल्कि मन-बहलाव के लिए मन घड़न्त कहानियां लिख दी गई हैं जिन्हें कई लोग अन्धश्रद्धा से सत्य मान लेते हैं। बाबा 'सती और चुड़ाला,' 'खुदा दोस्त' 'गुल बकावली,' 'बटुक महाराज' अथवा 'बटुक कृष्ण,' सत्यनारायण की कथा आदि-आदि का वास्तविक रहस्य बताया करते।

कहानी के अतिरिक्त बाबा दृष्टान्त से भी कई बातों को स्पष्ट किया करते। परन्तु उन्हें कपोल-कल्पित बातें अच्छी न लगती बल्कि वे जीवन की सत्य घटनाओं और इतिहास के वृत्तान्तों को उद्धृत करना ज्यादा ठीक मानते। इस विधि से वे एक तो यह ऐतिहासिक वृत्तान्त प्रायः उद्धृत किया करते कि जब सोमनाथ का मन्दिर लूटा गया और भारत पर विदेशियों ने आक्रमण किया, तब भी भारत बहुत धनवान था। जिसका प्रमाण यह है कि वे ऊंटों के कारवाँ हीरे, रत्न, सोना चाँदी आदि लाद-लाद कर ले गए। इस प्रसंग को लेकर वे पूछते कि भारत जो कभी इतना मालदार था, वह ऐसा भिखारी क्यों कर बना कि आज उसे दूसरे देशों के सामने हाथ फैलाना पड़ता है।

केवल ऐतिहासिक वृत्तान्त ही नहीं बाबा ताज़ा समाचार से भी विश्व की गति-विधियों पर प्रकाश डालते। आजकल संसार में किस प्रकार मारामारी है, जहां-तहां लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश और महा-दुःख है, इसका वे स्पष्टीकरण किया करते। अनेक धर्म और 'धर्म-गुरु' होने पर भी कैसे धर्म ग्लानि है —बाबा इस भाव को उदाहरणों से पुष्ट किया करते।

बाबा राजा जनक और अष्टावक्र की कहानी का दो-तीन तरह से उदाहरण दिया करते। एक तो वे इस कहानी को प्रसंग में उद्धृत करते कि कैसे अपने प्रश्न का उत्तर न मिलने पर राजा जनक के बारे में प्रसिद्ध है कि उसने सभी विद्वानों को बन्दी बना दिया था। कोई भी विद्वान, जो विद्वानों के लिए की गई सभा में आया था, राजा के इस प्रश्न का कि—"यह सत्य है या वह सत्य है?" उत्तर नहीं दे पाया था। बाबा कहते कि आज संसार में साधुओं, सन्तों, गुरुओं और आचार्यों की भीड़ लगी है परन्तु कोई भी तो यह नहीं बता सकता कि परमात्मा का सत्य परिचय क्या है? अर्थात यह सत्य है या वह सत्य है?" अतः प्रसिद्ध कहानी के अनुसार तो यह सभी बन्दी बनाए जाने के योग्य हैं परन्तु आज न तो किसी एक व्यक्ति का राज्य है नहीं न ही राजा जनक के समान कोई प्रश्न पूछने वाला और साहसी है।

दूसरे, बाबा यह बताते कि राजा जनक की सभा में अष्टावक्र का वक्रयुक्त शरीर देख कर सभी विद्वान जब हंस पड़े थे तो अष्टावक्र ने कहा था कि ये सब चमार हैं क्योंकि यह तो मेरे शरीर रूपी चमड़ी को देखते हैं; शरीर में जो आत्मा है, उसे तो वे देखते ही नहीं हैं। इस प्रकार बाबा स्पष्ट करते कि आज कोई विद्वान हो या आचार्य, सभी देहाभिमानी ही हैं, सभी देह रूप चमड़ी को ही देखते हैं।

तीसरे बाबा कहते हैं कि राजा जनक की सभा में बैठे हुए सभासदों के समक्ष जब महल में आग लगने का समाचार सुनाया गया तो राजा जनक की स्थिति तो स्थिर रही परन्तु संन्यासियों में से कोई कहने लगा कि मेरा लंगोट वहां सूख रहा था. वह तो जल गया होगा! दूसरा संन्यासी कहने लगा "मेरा तो दण्ड वहाँ था, वह तो शायद जल गया होगा, हाय अब दूसरा दण्ड कहां से लाऊंगा?" इसी प्रकार तीसरा संन्यासी कहने लगा —"महाराज मुझे जाने की आज्ञा दीजिए ताकि जो कुछ भी मैं कूपिन —कपड़ा वहां छोड़ आया हूं, उसे बचा लूँ।" इन भावों से अभिभूत होकर वे सभी परेशान थे। इस प्रकार, बाबा कहते कि—आप सभी का संन्यास ऐसा कच्चा संन्यास नहीं होना चाहिए। आपका बुद्धि योग छोटी-छोटी चीजों की ओर नहीं जाना चाहिए जिन्हें आप लौकिक घर में छोड़ आए हैं या जो आप के सेवा-स्थान पर हैं। बल्कि ट्रस्टी होकर इन्हें संभालना चाहिए।

इस प्रकार, बाबा ज्ञान को सहज तरीके से समझाते रहते। □

समाचार चित्रों में

चोपड़ा शहर में विश्व हिन्दू परिषद की ओर से आयोजित सम्मेलन में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० मीनाक्षी जी।

पूना के समीप थेग्रर शूगर फैक्ट्री में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम रखा गया। ब्र०कु० आनन्दी प्रवचन करते हुए। मंच पर ब्र० कु० पारू, आशा, बृजशान्ता, हरदेवी एवं ब्र० कु० शामाकांत जी दिखाई दे रहे हैं।

सिवनी (म० प्र०) में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन जिला न्यायाधीश भ्राता विष्णु दत्त बाजपेयी द्वारा किया जा रहा है। साथ में बहिन संध्या खरे, ब्र० कु० कमल, पुष्पा एवं अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

फर्रुखाबाद में हुए शिक्षाविद् सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए जिला विद्यालय निरीक्षक डा० राजेन्द्र प्रसाद जी एवं ब्र० कु० सुमन बहन।

फर्रुखाबाद में औद्योगिक सम्मेलन में मंच पर उपस्थित हैं दाएं से ब्र० कु० सुमन, विद्या, ब्र० कु० आत्म इन्द्राजी मुख्य अतिथि मेहरोत्रा, ब्र० कु० सन्तराम, शरीफ अरविन्द कुमार, ब्र० कु० प्रभा तथा महेश्वरी जी।

चिकमंगलूर में विश्व शान्ति मेले की समाप्ति समारोह में (बाएं से) ब्र० कु० सूर्यनारायण जी, मुख्य अतिथि चन्द्रा गौड़, ब्र० कु० सरला तथा अन्य बैठे हैं।

आबू पर्वत पर '८३ में होने वाले विश्व शान्ति सम्मेलन के उपलक्ष्य में बनाई गई झांकी को ब्र० कु० गीता नासिक नगर पालिका के प्रशासक भ्राता तलरेजा जी को स्पष्ट करते हुए।

"पुष्कर में पतित पावन कौन ?" प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां की विधान सभा की सदस्या बहन मल्होत्रा जी ने किया। ब्र० कु० अनुराधा उन्हें प्रदर्शनी की व्याख्या करते हुए।

१९८३ में आबू पर्वत पर होने वाले विश्व शान्ति सम्मेलन के उपलक्ष्य में पूना में प्रैस कान्फ्रैन्स बुलाई गई। चित्र में ब्र० कु० बहनों के साथ संवाददाता तथा पत्रों के रिपोर्टर तथा संपादक उपस्थित थे।

होसर (तमिलनाडू) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता विवेक नारायन, सहायक कलैक्टर। ब्र० कु० सरला तथा अन्य साथ में हैं।

चिकमंगलूर सेवा केन्द्र पर वहां के पत्रकार ब्र० कु० सरला तथा निर्मला के साथ दिखाई दे रहे हैं।

कटक-तेलंगा बाजार स्थित संग्रहालय के चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र० कु० सुशीला जी। भ्राता घनश्यामजी डायरेक्टर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्ज उड़ीसा तथा अन्य बड़े ध्यान से सुनते हुए।

चिरकुन्डा कोयला खदान क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता के. एल. घोष, मुख्य प्रबन्धक पूर्वी कोलफील्डज ब्र० कु० कुसम, अर्चना तथा अन्य भाई-बहन चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

लखनऊ सेवा केन्द्र पर भ्राता पी. डी. अग्रवाल डायरैक्टर यू. पी. पी. डब्ल्यू. डी. रिसर्च इन्स्टीट्यूट के पधारने पर साहित्य भेंट करती हुई ब्र० कु० भगवती जी।

सचित्र समाचार

अमलनेर में विश्व हिन्दू परिषद् के निमन्त्रण पर ब्र० कु० मीनाक्षी सम्मेलन में उपस्थित हुईं। वहां उन्होंने शिव परमात्मा का परिचय दिया।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड गाजियाबाद में लगाई "उद्योग शान्ति प्रदर्शनी" का उद्घाटन फैक्ट्री मैनेजर डा. आर. के. नियोगी जी द्वारा किया जा रहा है। साथ में उपस्थित हैं लीगल मैनेजर भ्राता आर. के. खन्ना, ब्र. कु. कमलेश तथा अन्य।

कुन्डापुर, मंगलोर सेवा केन्द्र द्वारा रोटरी क्लब ब्रह्मावारा के सहयोग से "विश्व भ्रातृत्व तथा शान्ति" प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर सेमीनार में बोलते हुए पार्वती राव। मंच पर ब्र. कु. गीता, शकुन्तला, जयन्ती तथा रोटरी क्लब के पदाधिकारी विराजमान हैं।

बांसवाड़ा में स्टाल को देखने के पश्चात् नगर पालिका के अध्यक्ष भ्राता दिनेश जोशी के साथ ब्र. कु. शीला, ज्योति तथा अन्य भाई-बहन खड़े हैं।

हे नवयुग के निर्माता !

(ब्रह्माकुमार सूरज प्रकाश, सहारनपुर)

हे नवयुग के निर्माता ! हे जग के भाग्य विधाता !
प्यार से तुमने जिसको देखा, बदली उसकी जीवन रेखा ।।
बच्चे, बच्चे कह दुलारा, प्रीत प्यार से हमें संवारा ।
तुम्हारी मधुर मधुर मुस्कान, मूक रह कर देती सब ज्ञान ।।
जीवन आपका खुली किताब, हर सवाल का था जवाब ।
सोयी मानव जाति में, लाया आपने एक इन्कलाब ।।

शिव के रथ बनकर तुमने, बहाई जग में ज्ञान की धार ।
फैलाए अपने माध्यम से, नये शाश्वत सत्य विचार ।।
आदि अनादि बात कही, कुछ रीत न नयी चलायी थी ।
धर्म है सबका शान्ति पवित्रता बात यही दोहरायी थी ।।
शिव ही जग के परमपिता हैं यह पहचान कराई थी ।
आत्म रूप में भाई भाई सब, यही बात सिखलायी थी ।

युग का सारा तामस पी गए नव आलोक जगाया ।
जन, जन को मधुर व्यवहार का सौरभ सदा लुटाया ।।
माता सी ममता थी मन में, पितृ स्नेह की छाया ।
था बन्धुत्व सभी से जग में, सबको गले लगाया ।।
मन में अपने लिए जिज्ञासा, पास उनके जो आया ।
अति सरल ढंग से उसका, आत्म दीप जगाया ।।

जिससे पूछो कहता है वो, प्यार मुझे करते थे ।
मृदु स्वभाव और नजर रूहानी जादू सब पर करते थे ।।
तुम निज सुविधा की ओर कभी भी ध्यान नहीं देते थे ।।
तुम पथ प्रदर्शक थे बहुतों के, किस पर जान नहीं देते थे ।
तुम कथनी करनी के अन्तर को सदा मिटाया करते थे ।।
तुम सदगुण भूषित मानव थे, सबको अपनाया करते थे ।।

कह रहा है जगत सारा, ज्ञान का भंडार थे वो ।
और अहिंसा धर्म की नौका के पतवार थे वो ।।
वन परवाना, शिव शमा पर सब स्वाहा करने वाले ।
तुम निरहंकारी, परोपकारी, पर-कष्ट सदा हरने वाले ।।
विघ्नों को वरदान मानकर, बाधाओं को झेला ।
जीवन क्या है एक खेल है, खेल समझकर खेला ।।

तुम कई तूफानों से गुजरे, सच की मशाल को लेकर।
चलते रहे निरन्तर जिन्दगी के कंटकाकीर्ण पथ पर ॥
तुम अंगद सम अचल अडोल, बलशाली महावीर सरीखे।
माया के किसी रूप के आगे, कभी न झुकना सीखे ॥
सदा सत्य की जय होती है यह विश्वास अटल था।
परमपिता अपना साथी है, इस निश्चय का बल था ॥

यह जीवन एक महायज्ञ है,यही मानकर जिये निरन्तर।
रिद्धि-सिद्धि का लोभ न कर किंचित, यश वांछा लेश न कणभर
तुम शांति सुधा से ओत प्रोत मोह माया से रहे दूर।
तुम कमल सम न्यारे प्यारे, दिव्य गुणों से थे भरपूर ॥
तुम बहुगुण खान थे, किस किस गुण का चयन करूं।
हे धरती के बेदाग चांद मैं शतशत तुमको नमन करूं ॥

कर्म योगी बन की साधना, आपने जीवन पर्यन्त।
श्वेत वस्त्रों में सुशोभित, ओ कपिल मुनि ओ परम संत !
तुम सर्व स्नेही, सर्वस्व त्यागी, जीवन भर सेवा रत थे।
तुम त्याग तपस्या सेवा की, स्वयं साकार मूरत थे।
बन कर्मातीत सम्पूर्ण फरिश्ता, तज दिया भौतिक संसार।
हुए सुक्ष्म लोक के राही, स्तब्ध रह गया ब्राह्मण परिवार ॥

पार्थिव शरीर भस्मवत उड़ गया, कार्य अजर अमर है।
आपका हर एक कर्म अब, बन गया चरित्र है ॥
जीवन के आदर्श मनोरम इन आंखों के तारे।
हे युग दृष्टा ! हे युग सृष्टा ! शत शत नमन हमारे ॥
आज अट्ठारह जनवरी के दिन वचन तुम्हें देते हैं।
सच्चे मन से हम सब यह भागीरथ प्रण लेते हैं ॥

आशा के अनुकूल तुम्हारे हम सब काम करेंगे।
ब्राह्मण कुल का अपने जग में रोशन नाम करेंगे ॥
चल कर आपके नक्शे कदम पर ढालेंगे अपनी जिंदगानी।
हर कदम 'फालो' करेंगे, न करेंगे अपनी मनमानी ॥
शिव ही जग के परमपिता ये बात हमें सबको समझानी।
लाकर ही छोड़ेंगे जग में सतयुग की दैवी राजधानी ॥

मेरा अनुभव

बाबा ने एक सैकण्ड में नजर से निहाल कर दिया

(ब्र० कु० गोपाल, पाण्डव भवन, देहली)

यद्यपि मेरा जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ था, परन्तु मुझे भक्ति के कर्मकाण्डों और रूढ़ीवाद से बचपन से ही नफ़रत थी। मन्दिरों से, गीता व रामायण आदि के पाठ से मैं बहुत दूर रहता था। इन्जनीयरिंग की पढ़ाई के लिए बैंगलोर में चार साल छात्रावास में रहा, तो वहां के वातावरण से प्रभावित होकर सब बुरे व्यसन मेरे में प्रवेश कर गए। सिग्रेट, सिनेमा, मांस-मदिरा में रस आने लगा और ये दिनचर्या का अंग बन गए। इन्जनीयरिंग की पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात मैं जयपुर अपने लौकिक परिवार के पास आया तो देखा घर में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की गीता-पाठशाला खुली हुई है। सारा दिन सफेद वस्त्रधारी बहनों व भाइयों का घर में आना-जाना देख बड़ा क्रोध आता। बहुत समझाने की चेष्टा की गई, परन्तु मैंने सुनने से बिल्कुल इन्कार कर दिया और एक दिन निश्चय कर लिया कि जल्द ही हमेशा के लिए घर छोड़ दूँगा।

जून १९६६ का समय था। लौकिक पिताजी ने कहा कि मधुबन (माऊँट आबू) आश्रम को पार्टी जा रही है, आप भी हिल स्टेशन घूम आओ। आश्रम के नाम से तो चिढ़ थी लेकिन जयपुर में गर्मी थी, तो हिल स्टेशन घूमने के लिए मैं तैयार हो गया। आबू पहुंचने पर कुछ अच्छा न लगा। अगले दिन मैं वापस जयपुर जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन पार्टी की इन्चार्ज बहन के बार बार कहने पर बाबा से मिलने हेतु एक दिन और रुक गया।

खुदा दोस्त से पहली मुलाकात

मुझे कुछ पता न था "बाबा कौन है ? क्या कहता है ?" बाबा से मिलने का समय आया, नीचे छोटे हाल में पार्टियाँ एक के बाद एक मिल रही थीं, बाबा के सन्मुख बहनें व भाई आते, दृष्टि लेते, कुछ बात करते, फिर टोली खाकर चले जाते। मैंने नोट कर लिया और सोचा मैं भी ऐसी ही एक्टिंग बाबा के सामने कर दूँगा। मेरी भी बारी आई और मैं बाबा के सामने गया। बाबा ने हमारी पार्टी की इन्चार्ज बहन से पूछा "ये कोन है ?"

बहन जी ने कहा "ये गोपाल है, गुप्ता जी का लड़का है। जयपुर में जिनके यहां गीता-पाठशाला है।"

बाबा ने पूछा कि ये कब से ज्ञान में है ?

बहन जी ने कहा कि घर में गीता पाठशाला है।

बाबा ने कहा कि यह तो मैं जानता हूँ, लेकिन मैं पूछ रहा हूँ कि ये कितने समय से ज्ञान में है। सात दिन का कोर्स किया है ?

बहन जी ने कहा कि ज्ञान तो सारा दिन घर में चलता ही रहता है।

मैं समझ गया कि यहाँ बिना ज्ञान लिए नहीं आना चाहिए था। बाबा कुछ पूछ रहा है और बहन कुछ जवाब दे रही हैं। समय बरबाद होते देख मैं बीच में ही बोल पड़ा—"बाबा, मैंने ज्ञान नहीं लिया है, मैं तो यहां पहाड़ी पर घूमने आया हूँ।"

बाबा बोले "अच्छा बाबा गोद नहीं लेगा। हैण्ड (Hand shake) करेगा।" मुझे बहुत बुरा लगा, कि सबके सामने बेइज्जती हो रही है। सब मेरी तरफ देख रहे हैं। इससे तो कल ही जयपुर चला जाता।

जीवन में कभी हार नहीं खाई, फेल नहीं हुआ था और यहां जबरदस्ती फेल किया जा रहा है। अपमान किया जा रहा है। मैंने बाबा से यूँ ही कह दिया "बाबा ज्ञान तो अच्छा है, ले लूँगा" बाबा

(शेष पष्ठ २८ पर)

बाबा द्वारा दी गई शिक्षाएं

1. देही-अभिमानी बनो।
2. सदा अपने परम-प्रिय, परम-पिता, परम-शिक्षक, परम-सद्गुरु, निराकार, परमात्मा शिव की स्मृति में रहो।
3. राजयोग द्वारा सर्व विकारों पर विजय प्राप्त करो।
4. स्वयं में नम्रता, सहनशीलता, सन्तुष्टता आदि-आदि दैवी गुणों की धारणा करो।
5. याद रखें कि सृष्टि-चक्र में यह आप सभी का अन्तिम जन्म है, महाविनाश सामने है। सतयुग का शीघ्र उदय होगा ?
6. आने वाली सतयुगी दैवी दुनिया में पवित्रता, सुख, शान्ति आपका ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है। अब नहीं तो कभी नहीं ?

(शेष पृष्ठ २७ का)

बोले बहुत परीक्षायें आयेंगी। मैंने कहा "सब पास (Pass) कर लूंगा।"

बाबा ने कहा "अच्छा", दृष्टि दी, कहा "अच्छा बच्चा है", गोद में लिया व टोली दी।

बस फिर क्या था, न जाने वो क्या जादू था, क्या शक्ति थी, क्या नशा था, एक पल में ही जैसे सुई को चुम्बक खींचता है, मुझे भी खींच लिया। मैं तो बाबा को देखते ही रहना चाहता था, बाबा आगे-आगे और मैं पीछे-पीछे, बस बाबा मेरी आँखों से ओझल न हो। जैसे बाबा मेरा गहरा दोस्त बन गया। कभी प्रातः ४ बजे नहीं उठा था, अभी तो सारी रात नींद नहीं आई, कब ४ बजें और बाबा को देखें।

अब सोचा अगर ज्ञान नहीं लिया तो बाबा के साथ कैसे रह पाऊंगा। जो भाई मेरे साथ कमरे में रह रहा था, वह बहुत ज्ञान व धारणायुक्त था, वह भी परेशान था कि कैसा व्यक्ति मधुबन पहुँच गया। जब मैंने उसे कहा "मुझे भी ज्ञान सुनाओ ना।" तो उसने सोचा कि ये व्यक्ति क्या ज्ञान लेगा, टालने के लिए उसने कोर्स शुरू किया—

1. सिनेमा नहीं देखना है।

2. बाजार में होटलों इत्यादि पर कुछ नहीं खाना है। 3. सारी उम्र शादी नहीं करनी है।

बोला आगे सुनोगे। मैंने कहा ठीक है, कोई बात नहीं उसकी एक-२ बात पर मुझे शाक (Shock) लग रहा था, लेकिन मेरा बाबा, मेरा गहरा दोस्त जैसे शाक अबसोरबर (Shock absorber) के रूप में सामने था। उसी सेकेण्ड मुझे ऐसा लगा कि ये सब मामूली बातें हैं। बाबा से मिल सकूंगा, उसके लिए सब कुछ कर सकता था। उसकी तो एक नजर ने बदल दिया था। सारी ज्ञान की बातें अगले दिन ही समझकर मंजूर कर लीं।

बड़ी मुश्किल से वापस जयपुर आया। शरीर जयपुर में था, लेकिन आत्मा मधुवन का चक्कर लगा रही थी। सारी दिनचर्या बदल गई। कालेज के सब दोस्त, सर्व देह के सम्बन्धी भूल चुके थे। अमेरिका में उच्च शिक्षा के लिए जाना था। मैंने मना कर दिया। अमेरिका से बाबा से मिलने कैसे आऊंगा ? अमेरिका से पत्र आया कि इस लड़के का मैन्टल चैक अप (Mental check-up) कराओ। लेकिन मैं तो मैण्टली चेन्ज (Mentally change) हो चुका था। एक साल में 8-10 बार बाबा से मिलने मधुबन गया। जीवन आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होता गया। बाबा के संग ने सब मेरे लिए आसान कर दिया। ३ महीने बाद सेन्टर पर रहना शुरू कर दिया। मुझे कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी। बाबा खुदादोस्त की तरह सदा साथ रहता है, ऐसा ही जीवन का अनुभव है। ●

आध्यात्मिक सेवा समाचार

(ब्र० कु० श्रीराम तथा ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर, दिल्ली द्वारा संकलित)

नासिक—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नगरपालिका के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा चैतन्य झांकियों का आयोजन किया गया जिन से 25000 आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त कालिका देवी के मंदिर के पास आयोजित 'विश्व नव निर्माण' प्रदर्शनी से भी 40.000 आत्माएं लाभान्वित हुई।

आनन्द—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि सामर खा, कासोर, लंकवेल, आंकलाव, जिटोडिया, भालोज, खानकूपा, भोजरी आदि गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोपैक्टर शो, प्रवचन-नाटक-गीत तथा चैतन्य झांकियों के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे लगभग 20,000 आत्माएं लाभान्वित हुई।

जीन्द—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया, जिसमें हरियाणा के कराधान व आवकारी मंत्री तथा 50 अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया सभी को प्रदर्शनी दिखाई गई, बाद में प्रवचन द्वारा शिव बाबा का दिव्य संदेश दिया गया।

लक्ष्मीनगर—(दिल्ली) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया, जिसमें लगभग 50 आत्माओं ने भाग लिया ! प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया तथा प्रवचन द्वारा शिव पिता का दिव्य संदेश भी दिया गया।

गोरखपुर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बरहज नामक ऐतिहासिक स्थान पर त्रिदिवसीय राजयोग आध्यामिक प्रदर्शनी, योगशिविर तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिनसे नगर के लोगों तथा आस-पास के गांवों से भी अनेक लोगों ने लाभ प्राप्त किया।

कोन नगर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि श्री रामपुर में 5 दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसको अनेकानेक आत्माओं ने बहुत रुचि पूर्वक देख कर जीवन लाभ प्राप्त किया।

उदय पुर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बांसवाड़ा में नगरपालिका की ओर से आयोजित मेले में एक स्टाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। मेले में आये हुए हजारों लोगों ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त सात स्कूलों में प्रदर्शनी तथा प्रवचन किए गए। गोराद गांव में गीता पाठशाला की स्थापना की गई।

काठमंडू—सेवाकेन्द्र से ब. कु. शीला लिखती हैं कि नेपाल की महारानी के 34 वें शुभ जन्मोत्सव पर इन्हें ला. ना. का चित्र तथा साहित्य भेंट किया गया। इस मास लेबनान में आए हुए नेपाली शांति सेना के कमाण्डर भ्राता केसर बहादुर गड़तौला जी तथा नेपाल राष्ट्रीय बैंक के गर्वनर भ्राता कल्याण विक्रम अधिकारी जी संग्रहालय देखने के लिए पधारे इसके अतिरिक्त बूड़ा नीलकंठ नामक स्थान पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे 8000आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

चिकमगलूर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि एक सप्ताह के लिए 'विश्व शांति मेले' का आयोजन किया गया तथा विभिन्न वर्गों के अलग-अलग सम्मेलन भी बुलाए गए। मेले से हजारों आत्माओं ने शिव बाबा का संदेश प्राप्त किया।

पूना—सेवाकेन्द्र से ब. कु. बृजशांता लिखती हैं कि यहां पर प्रैस कान्फैंस बुलाई गई तथा शुगर फैक्ट्री में प्रवचन का भी कार्यक्रम रखा गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। सभी दैनिक समाचार पत्रों में ये सर्विस समाचार प्रकाशित हुए।

गोहाटी—सेवाकेन्द्र से ब. कु. शीला लिखती हैं कि पलटन बाजार में तीन दिन के लिए तथा आठगांव में दो दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई दोनों प्रदर्शनियों से हजारों आत्माओं मे शिव पिता का संदेश प्राप्त किया।

राजकोट—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि

यहाँ पर सभी सेवाकेन्द्रों की कन्याओं के लिए "आध्यात्मिक टीचर ट्रेनिंग कैम्प" का आयोजन किया गया, जो कि 15 दिन चला। अन्तिम दिन सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी कन्याओं ने अपने परिवर्तन के अनुभव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रवचन आदि सुनाए। प्रेस कान्फैंस भी बुलाई गई तथा चैतन्य झांकियां भी सजाई गईं। इस प्रकार यह कार्यक्रम बहुत ही सरलता पूर्वक सम्मन्न हुआ।

गोवा—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दीपावली के अवसर पर सांई बाबा के मंदिर में तथा दो अन्य गांवों में प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन के कार्यक्रम रखें गए। इस के अतिरिक्त दैनिक समाचारपत्रों में तथा रेडियो द्वारा भी "दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य" प्रसारित किया गया।

मिरजापुर—सेवाकेन्द्र से ब्र. कु. कमल लिखती हैं विध्यावासिनी देवी के मेले में पांडाल लेकर राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिशिर का आयोजन किया गया। मेले में आए हुए हजारों लोगों ने 10 दिन तक इनसे लाभ उठाया, जिनमें विशेषकर भक्तगण बहुत प्रभावित हुए।

हुबली—सेवाकेन्द्र से ब्र. कु. निर्मला लिखली हैं कि 1 नवम्बर से 15 नवम्बर तक डा. गिरीश पटेल के "मेडिटेशन एण्ड मेडिशियन" नामक विषय पर विभिन्न स्थानों पर प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए जिनमें डाक्टर वर्ग तथा अन्य सभी वर्गों के वी. आई. पीज ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों के संवाददाताओं की प्रैस कान्फैंस भी बुलाई गई, उन्होंने भी इस विषय को समाचार पत्रों में प्रकाशित किया।

सिरसी—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर रोटरी क्लब में डा. गिरीश पटेल की अध्यक्षता में डा. वर्ग के लिए विशेष स्नेह मिलन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 20 डाक्टरर्स ने उपस्थित हो कर 'मेडिटेशन एण्ड मैडिशियन' विषय पर हुए प्रवचन से लाभ उठाया।

अंजार—सेवाकेन्द्र से ब्र. कु. उमा लिखती हैं कि दीपावली के उपक्ष्य में सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गरबा, गीत, गजल स्पर्धा विशेष आकर्षक थे। 300 बच्चों व मंडलियों ने इसमें भाग लिया, चार जजों के निर्णय अनुसार प्रथम पुरस्कार 151 रु. द्वितीय 101 रु. और तृतीय पुरस्कार 71 रु. तथा प्रमाणपत्र वितरित किए गए। इस कार्यक्रम से लगभग 1500 आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

कपूरथला—सेवाकेन्द्र की ओर से नडाला गांव में तीन दिन के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा योगशिविर का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी से लगभग 100 आत्माएं लाभान्वित हुई। इसके अतिरिक्त शेखुपुरा गांव में तथा कपूरथला शहर में भी प्रदर्शनियां लगाई गई, जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

पटना—सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि बोरिंग केनाल सेवाकेन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर 6 दिन के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे 10.000 आत्माओं ने लाभ उठाया। विनोवा भावे के स्मृति दिवस पर भी विहार के मुख्यमन्त्री भ्राता जगन्नाथ मिश्रा की उपस्थिति में योगदान का कार्यक्रम रखा गया।

राँची—सेवाकेन्द्र से ब्र. कु. निर्मला लिखती हैं दीपावली के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा ला. ना. की चैतन्य झांकी सजा कर यह त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया गया। इसके अतिरिक्त रांची संग्रहालय में प्रैस-कान्फैंस आयोजित की गई, जिसका समाचार दैनिक समाचार पत्रों में तथा पटना, राँची, भागलपुर आकाशवाणियों से भी प्रसारित किया गया।

मुजफ्फर नगर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है रामलीला टीले पर तथा गांधी कालोनी क्षेत्र में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे लगभग 400 क्षात्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

त्रिवैन्द्रम—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गुरुवापूर श्रीकृष्ण मंदिर में शबरिमला मण्डल के महोत्सव के अवसर पर, ओचिरा देवस्वम् बोर्ड द्वारा आयोजित धर्म-सांस्कृतिक सम्मेलन के अवसर पर तथा कोचीन देवस्वम बोर्ड द्वारा आयोजित धर्म-सांस्कृतिक सम्मेलन के अवसर पर प्रवचन कार्यक्रम रखे गए, जिनमें भारत की प्राचीन सभ्यता, शिव बाबा का परिचय और संस्था के परिचय पर प्रकाश डाला गया। कोचीन में त्रिदिवसीय योग शिविर तथा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

तिरुपति—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि 27 नवम्बर को स्थानीय त्यागराज मंडप में 'प्राचीन भारत

का वैभव' निबन्ध पर प्रतियोगिता कार्यक्रम रखा गया, जिसकी अध्यक्षता संस्कृत विद्यापीठ के प्रिंसिपल भ्राता बाल सुब्राह्मण्यम जी ने की। सभी पुरस्कार विजेताओं को टी० टी० डी० की ओर से 2000 रु० का बैंक ड्राफट तथा संस्था की ओर से साहित्य भेंट किया गया। 28 नवम्बर को विश्व शांति सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें इन्डोनमेंट मिनिस्टर भ्राता जी० नगेश्वर राव तथा देवस्थान के डिप्टी एजुकेशन आफिसर ने भी भाग लिया। तिरुपति निवासी इन कार्यक्रमों से बहुत प्रभावित हुए।

यवतमाल—(महाराष्ट्र) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दो दिन के लिए विश्व शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली से ब्र०कु० हृदयमोहिनी जी तथा ब्र० कु० चक्रधारी जी ने भाग लिया। एक शोभा यात्रा भी निकाली गई। इस सम्मेलन से हजारों लोगों ने लाभ प्राप्त किया।

अजमेर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सरकार की ओर से पुष्कर में 'राजस्थान विकास प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें एक स्टाल लेकर संस्था की ओर से भी एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिस का उद्घाटन पुष्कर की एम० एल० ए० बहिन मल्होत्रा जी ने किया इस प्रदर्शनी को राजस्थान के मुख्य मंत्री, गृह राज्य मंत्री, संवाददाताओं तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित लगभग एक लाख लोगों ने देखा।

गोधरा—सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि गोधरा में एक विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। पोस्टर्स, बैनर्स, स्लाइडस तथा शोभा यात्रा द्वारा मेले का संदेश जन-जन तक पहुंचाया गया। गोधरा की समस्त जनता ने तथा आसपास के गांव वालों ने इस मेले से लाभ उठाया। कई आत्माओं ने योगशिविर भी किया।

यादगीर—से समाचार मिला है कि गुलबर्गा सेवा-केन्द्र की ओर से यहाँ पर राजयोग प्रदर्शनी एवं शिविर का आयोजन किया। लगभग 15.000 लोगों ने प्रदर्शनी को देखा तथा 250 भाई बहनों ने राजयोग शिविर किया।

हजरतगंज—(लखनऊ) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कार्तिका पूर्णमा के अवसर पर लाजपत नगर (लखनऊ) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन यू० पी० की पी० डब्लयू डी० रिसर्च इंस्टीच्यूट के डायरेक्टर भ्राता पुरुषोत्तम दास अग्रवाल जी ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग 2000 आत्माओं ने लाभ उठाया।

चन्द्रपुर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि अहेरी नामक तालुका में त्रिदिवसीय विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन श्रीमत धर्मराव बाबा के द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्हें प्योरिटी पेपर तथा 'ज्ञानामृत' का भी मेंबर बनाया गया। पाँच दिन की प्रदर्शनी से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। करीब 70 आत्माओं ने योगशिविर भी किया।

बिलासपुर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सात दिन के लिए प्राथमिक पाठशाला के प्रांगण में चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्थानीय जनता के अतिरिक्त निकटवर्ती 15 गाँवों के लोगों ने भी इस प्रदर्शनी से लाभ उठाया। लगभग 500 भाई बहिनों ने राजयोग शिविर भी किया। दैनिक समाचार पत्रों के संपादकों ने भी इस अमाचार को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

रोपड़—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि ईशपुर गाँव में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसको लगभग 500 भाई-बहिनों ने देखा।

मजलिस पार्क—(दिल्ली) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां दिवाली मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जो कि सारे मेले में आकर्षण का केन्द्र थी। मेला कमेटी के सभी सदस्यों ने भी प्रदर्शनी को देखा। हजारों आत्माओं ने इस प्रदर्शनी द्वारा शिव बाबा का दिव्य संदेश प्राप्त किया।

भंडारा—उप सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां से 45 कि० मी० दूर पवनी नामक गांव में चार दिन के लिए विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई तथा योग शिविर भी रखे गए। प्रदर्शनी से लगभग 5000 आत्माओं ने और योग शिविर से लगभग 50 भाई बहनों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त डिस्ट्रिक्ट जेल भंडारा, मोहाली तथा अकोट गांवों में भी प्रोजैक्टर शो, प्रवचन, नाटक आदि के कार्यक्रमों द्वारा लगभग 5400 आत्माओं को शिव पिता का संदेश दिया गया।

संकेश्वर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि "हैबल" नामक गांव के जूनियर कालेज में एक प्रवचन का

कार्यक्रम रखा गया। जिसमें ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गतिविधियों तथा परमपिता के परिचय से अवगत कराया गया। माताओं और कन्याओं द्वारा इस कार्य में विशेष योगदान का महत्त्व भी दर्शाया गया।

कटक—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि काला हांडी जिला के भवानी पाटना में तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 5000 आत्माओं ने लाभ उठाया। जाजपुर रोड़ में विश्व शांति महायज्ञ गीता परायण महोत्सव' हुआ, जिसमें ब्रह्माकुमारी बहिनों ने प्रवचन किए। इसके अतिरिक्त जटनी, काहिमा; बालेश्वर आदि स्थानों पर क्रमशः नया सेवा केन्द्र, गीता पाठशाला, मेडिटेशन रूम आदि के उद्घाटन उत्सव बड़ी धूकधाम से मनाए गए।

निशातगंज—(लखनऊ) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर भैया दूज का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर प्रदेश कारागार के महानिरीक्षक भ्राता प्रयाग दत्त चतुर्वेदी जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे उनको संस्था की गतिविधियों तथा परमपिता के परिचय से अवगत कराया। वे बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने सद्भावना प्रकट करते हुए संस्था के कार्य की बहुत सराहना की।

बांदा—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दीपावली के शुभ अवसर पर चार दिन के लिए शांति पथ प्रदर्शनी, राजयोग शिविर एवं प्रवचनों का कार्यक्रम जैन धर्मशाला के विशाल सभा भवन में आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता बृजराज सिंह, भूतपूर्व राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश ने किया। उन्होंने माउंट आबू शिविर में प्राप्त अपने अलौकिक अनुभव सुनाए। इस कार्यक्रम में गीत, नृत्य तथा ल० ना० की झांकी विशेष आकर्षण का केन्द्र थीं। नगर के हजारों व्यक्तियों ने प्रदर्शनी को देख कर अपनी खुशी जाहिर की।

फर्रुखाबाद—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर दो दिन के लिए शिक्षाविद् एवं औद्योगिक सम्मेलन बुलाया गया। प्रथम दिन शिक्षाविद् सम्मेलन में अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक भ्राता राजेन्द प्रसाद शर्मा जी थे। अनेक वक्ताओं ने शिक्षा के साथ साथ नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का महत्व स्पष्ट किया। दूसरे दिन औद्योगिक सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्राचार्य भ्राता महेश चन्द्र जी मेहरोत्रा थे। वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि औद्योगिक विकास के साथ साथ अनैतिकता की वृद्धि होने के कारण मानसिक अशांति भी बढ़ती जा रही है, जिसका एकमात्र उपाय कर्म योग अथवा राजयोग ही है। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। □

(शेष पृष्ठ ८ का)

शान्तिधाम का रास्ता देख सकें।

दूसरी बात—जैसे बाबा जब बच्चों से मिलते थे तो सब अनुभव करते थे कि बाबा हमसे मिला। परन्तु जैसे कि बाबा ने कुछ देखा ही नहीं, बाबा ने सब समाचार सुना, परन्तु जैसे कि कुछ सुना ही नहीं। यही सम्पूर्ण उपराम रहने का मेरा पुरुषार्थ रहता है कि मैं देखते हुए भी न देखूँ···।

ईश्वरीय परिवार के लिए आपका प्रेरणादायक संदेश ?

बाबा के हम सभी महारथी बच्चे एक हैं। हम सब एक हैं। हम सदा एक हैं। हम एक के हैं। हम एक की ही श्रीमत से सारे विश्व को एक बनायेंगे। नई दुनिया में एक धर्म, एक राज्य होगा, यही हमारी एकता का प्रमाण है। हमारी एकता, पवित्रता (Unity, Purity) और शान्ति (Peace) की शक्ति ही सारे विश्व को बदलने वाली है।

इस प्रकार जिनका सम्पूर्ण जीवन सृष्टि के प्रथम पुरुष प्रजापिता ब्रह्मा व परमपिता परम-आत्मा के साथ, उनकी छत्र-छाया में बीता। जिन्होंने अपने नयनों से भगवान को नव सृष्टि रचते देखा उन सर्व के स्नेह व आदर की पात्र दादी जी ने अति अव्यक्त रूप से अतीत की यादों का वर्णन किया और वर्णन करते-करते दादी जी और हम, बाबा के चरित्रों की यादों में खो गये। ●

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा विकास प्रिण्टर्स, 1/7, गीता कालोनी, दिल्ली-31 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70